ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

फाल्गुन-चैत्र २०७४-७५ मार्च २०१८

₹ २०

भगिनी निवेदिता अंक

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

Most trusted & renowned institute among IAS aspirants

पिछले डेढ़ दशक से लगातार हिन्दी माध्यम का सर्वश्रेष्ठ परिणाम

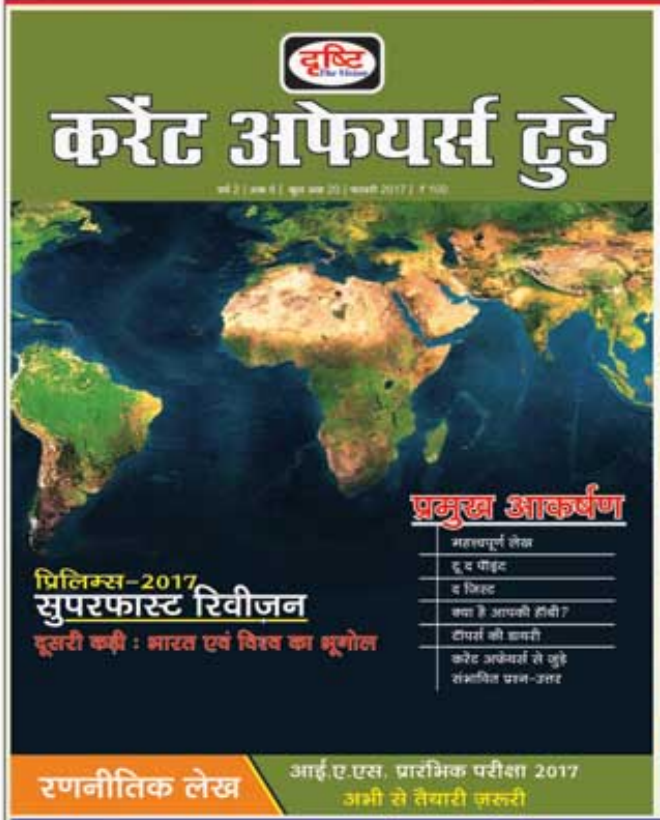

आपके नज़दीकी पुस्तक विक्रेता के पास उपलब्ध

सब जानते हैं कि सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी सिर्फ किताबों और नोट्स से नहीं हो सकती। यह भी ज़रूरी है कि आप दिन-प्रतिदिन की घटनाओं से जुड़ने के लिए इंटरनेट पर उपलब्ध अच्छे लेखों को पढ़ते रहें और अच्छी डिबेट्स को सुनते रहें।

आपकी इन सभी समस्याओं को सुलझाने के लिए हम आपको आमंत्रित करते हैं अपनी लोकप्रिय वेबसाइट पर

www.drishtiias.com

वितरण एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें- (+91) 8130392355

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-110009 | Contact : 87501 87501, 011-47532596

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

फाल्गुन-चैत्र २०७४-७५ ▪ वर्ष ३८
मार्च २०१८ ▪ अंक ९

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय
चेक/ड्राफ्ट पर केवल देवपुत्र लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com

सीधे देवपुत्र के खाते में राशि जमा करने हेतु -
खाता संख्या -53003591451
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो!

मैं जब-जब स्वामी विवेकानंद जी को पढ़ता हूँ तो लगता है कि राष्ट्रभक्ति, संस्कृति प्रेम, धर्म गौरव और स्वाभिमान जैसे गुणों का कोई श्रेष्ठतम आदर्श हमारे संज्ञान में यदि हो सकता है तो वे केवल स्वामी विवेकानंद जी ही हो सकते हैं।

किन्तु जब स्वामी जी का जीवनवृत्त पढ़ता हूँ तो अनायास एक प्रसंग पढ़कर चौंक उठता हूँ। स्वामी जी स्वयं तरुण बालक-बालिकाओं से चर्चा करते हुए उनसे पूछते हैं- ***आप सबको अपने भारत देश के प्रति, अपनी संस्कृति के प्रति और हिन्दू धर्म के प्रति कैसा श्रद्धाभाव, अनुराग और स्वाभिमान रखना है? इसका कोई श्रेष्ठतम् आदर्श आपके समक्ष हो सकता है जिनसे आप सब प्रेरणा ग्रहण कर सकते हैं तो वे है भगिनी निवेदिता।***

हम कल्पना कर सकते हैं स्वामी जी स्वयं जिन्हें आदर्श निरूपित करें वे सचमुच इन गुणों की कितनी प्रामाणिक धनी होंगी? यह वर्ष भगिनी निवेदिता का १५०वाँ जयंती वर्ष है। हम सबके लिए भी उनका चरित्र प्रेरणा का दीप स्तम्भ बने इस भाव से यह अंक संयोजित किया गया है।

लंदन की धरती पर स्वामी विवेकानंद जी से भेंट के पश्चात् वे हृदय में दृढ़ निश्चय लिए भारत भूमि पर आ गईं। हिन्दू धर्म का गहन अध्ययन कर उसकी श्रेष्ठता पर स्वामी जी की अध्यक्षता में कलकत्ता की धरती पर वे इस विषय पर भारतीय समाज को प्रबोधन देती हैं। उनकी इस अगाध श्रद्धा को सामाजिक स्वीकृति प्रदान करने के लिए स्वयं माँ सारदा उनके साथ भोजन ग्रहण करती हैं। यहाँ से मार्गरेट एलिजाबेथ नोबल की जीवन दिशा ही बदल जाती है। वे हिन्दू धर्म में दीक्षित होकर स्वामी जी से ***'भगिनी निवेदिता'*** *नाम पाती हैं। इसके पश्चात् तो वे स्वामी जी के साथ सतत प्रवास में रहीं। सम्पूर्ण भारत ही नहीं अपितु सागर पार तक वे हिन्दू धर्म की पताका लिए चलती रहीं।*

स्वाध्याय वृत्ति ऐसी कि स्वामी जी के विचार सुनते-पढ़ते उन्होंने अपने आपको इस विचार के प्रसार के लिए पूरी तरह समर्पित कर दिया। उनके जीवन का कण-कण और क्षण-क्षण इसी यज्ञ में आहुति बन अर्पित होता रहा।

'काली द मदर', 'द वेब ऑफ इंडियन लाइफ' 'ग्लिम्प्सेस ऑफ फेमाइन एण्ड फ्लड इन ईस्ट बंगाल' 'द मास्टर एज आई सॉ हिम' एवं 'क्रेडल टेल्स ऑफ हिन्दुइज्म' जैसी पुस्तकों की प्रणेता भगिनी निवेदिता को हमारी विनम्र सुमनांजली है यह अंक। कैसा लगा यह अंक आप सब पत्र देकर अपने विचार से हमें अवश्य अवगत कराइए।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से आरंभ होने वाले अपने नववर्ष युगाब्द ५१२० विक्रम संवत् २०७५ की हार्दिक शुभकामना सहित...

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

- भावी की योजना ०५
- महासंयोग ०६
- भारत से प्रेम करो ०७
- भारत माँ ने गोद ली... ०८
- दक्षिणेश्वर तीर्थ में ०९
- जीवन का सर्वश्रेष्ठ दिवस १०
- सबसे आनंदमय प्रभात ११
- उठो! उठो! १२
- अंग्रेजी माध्यम नहीं १३
- अप्रतिम सेवा १४
- जब स्वामी जी नहीं रहे १५
- वीर बनो १६
- वाहे गुरूजी की फतह १७
- साहस का अभाव क्यों? १८
- कविता की गहरी परख १९
- स्वदेशी भाव ही स्वभाव २०
- मान्यता के प्रति सचेत २१
- प्रेम से परिवर्तन २२
- तपोपूर्ण कार्यशैली २३
- वह अनोखी भिक्षा २४
- स्वच्छता का संस्कार २५
- पत्थर से कठोर... २६
- अनुशासन पर दृष्टि २७
- सबके लिए ममतामयी २८
- भारत की रानी कौन? २९
- भारतीयता का गौरव ३०
- बर्बर अंग्रेज ३१
- प्रत्येक क्षेत्र में भारतीयता ३२
- नारी का स्थान ३३
- विज्ञान में सहायता ३४
- संस्कारों से भारतीय ३५
- इतिहास से तादात्म्य ३६
- अपनी भाषा अपनाओ ३७
- भारत का राष्ट्रीय चिन्ह ३८
- समकालीन विशिष्ट जनों से... ३९
- महाज्योति में विलीन ४०
- भारत पुत्री निवेदिता ४१
- एक अद्भुत जीवन यात्रा ४२
- श्रद्धांजलियाँ ४३
- निवेदिता के अमृत वचन ४६

प्रसंग लेखन– गोपाल माहेश्वरी
चित्रांकन – बृज पाटील, भोपाल

संदर्भ ग्रंथ

इस अंक के लिए सामग्री संचयन में हमने अग्निशिखा भगिनी निवेदिता– प्रा. प्रमोद डोरले, सिस्टर निवेदिता–प्रव्राजिका आत्मप्राणा, निवेदिता एक समर्पित जीवन– उमेश कुमार चौरसिया, भारत की निवेदिता– रामकृष्ण मिशन इन्स्टीट्यूट ऑफ कल्चर कोलकाता, भगिनी निवेदिता–प्रभुशंकर एवं कतिपय स्फुट रचनाओं का आधार ग्रंथों के रूप में उपयोग किया है। हम इन ग्रंथों के लेखकों एवं प्रकाशकों का इस हेतु हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं। –सम्पादक

भावी की योजना

अठारहवीं सदी का उत्तरार्द्ध। भारतवर्ष की भांति आयरलैण्ड भी अपनी परतंत्रता की बेड़ियाँ उतार फेंकने के लिए संघर्षरत था। अपने राष्ट्र को दासता से मुक्त कराने के लिए छटपटाने वाले देशभक्तों में एक प्रखर राष्ट्रभक्त आयरिश पादरी भी थे, नाम था जॉन नोबल।

उनके पुत्र सैम्युअल नोबल और पुत्रवधु मैरी हेमिल्टन की पहली संतान के रूप में एक अत्यंत सुन्दर कन्या जन्मी– मार्गरिट। दिन था २४ अक्टूबर १८६७ और स्थान था उत्तरी आयरलैण्ड का छोटा सा गाँव डान्गैनन।

मार्गरिट को मिली दादाजी से प्रखर देशभक्ति, पिताजी से अगाध सेवा भावना और माँ से आस्तिकता, प्रेम, सौन्दर्य और विनम्रता का संस्कार।

जब वह गर्भ में ही थी माँ ने प्रतिज्ञा ली थी– ''यदि मेरे बच्चे का जन्म सुरक्षित रूप से हो जाए तो उसे मैं प्रभुसेवा में अर्पित कर दूंगी।''

और जब वह छोटी ही थी पिता ने अंतिम आकांक्षा व्यक्त की– ''जब कभी बुलावा आए मार्गरिट को जाने देना। इस प्रकार वह अपनी योग्यताओं का उपयोग कर बड़े करिश्मे कर दिखाएगी।''

तब केवल ईश्वर ही जानता होगा– ''माँ जिसे प्रभुसेवा में समर्पित करना चाहती थी वह प्रभु उसे मिलेंगे भारतवर्ष के रूप में और पिता जिस बुलावे की बात कह गए थे वह बुलावा देंगे स्वयं विवेकानंद।'' यह सब सच हुआ २८ जनवरी, १८९८ को मार्गरिट के प्रथम भारत आगमन के साथ।

लेकिन उसके पूर्व ...

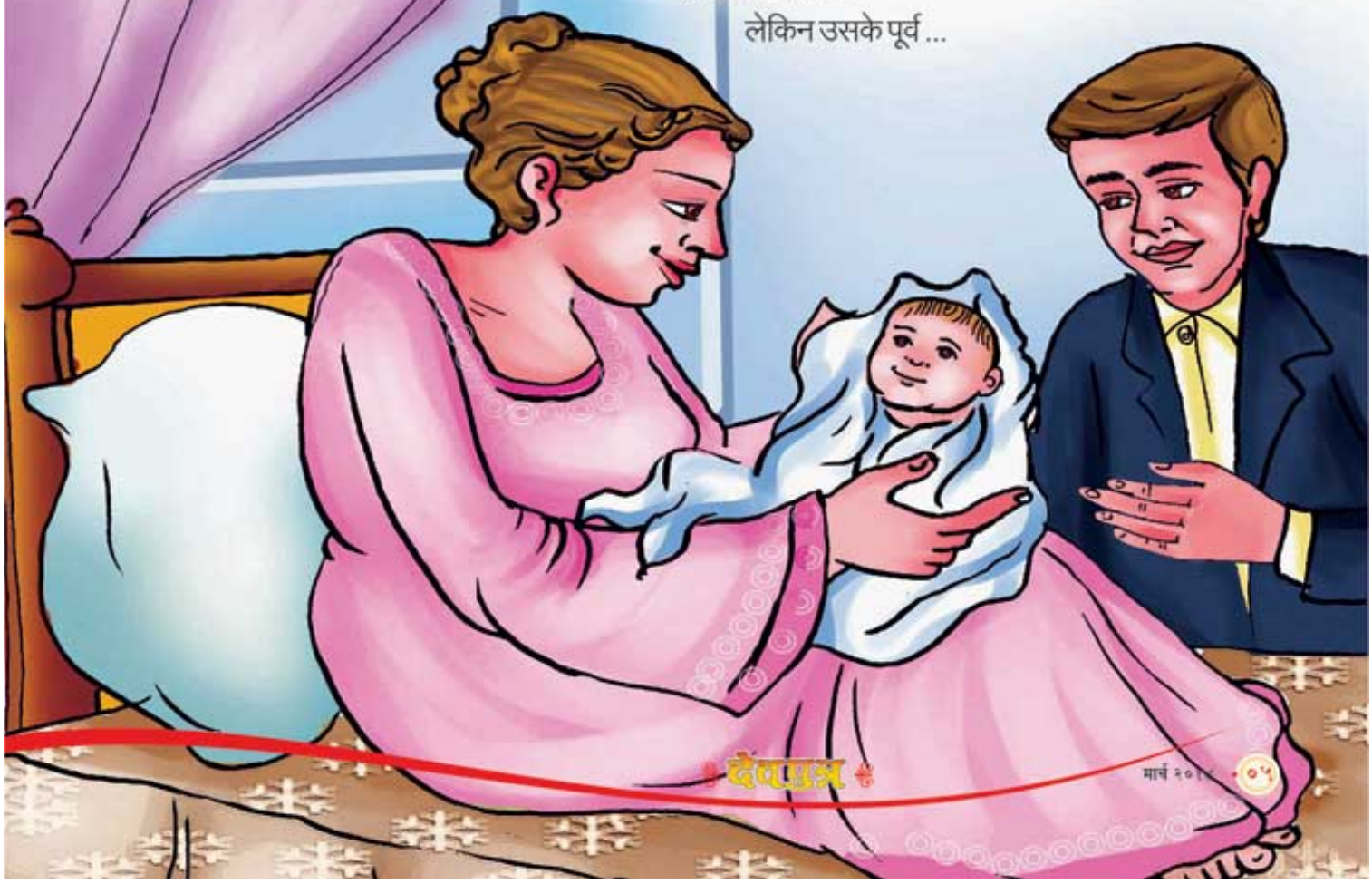

महासंयोग

नवम्बर १८९५ रविवार। कड़कड़ाती सर्दी से ठिठुरता लंदन। सुश्री ईसाबेल मार्गेसन का घर। पन्द्रह सोलह आमंत्रित अतिथियों के मध्य एक अत्यंत तेजस्वी, काषायधारी तरुण संन्यासी भारतीय वेदान्त के अद्वैततत्व की अनूठी व्खाख्या कर रहे हैं। ये हैं स्वामी विवेकानंद, मार्गरिट पहली बार इस हिन्दू योगी को सुन रही है। वह मंत्रमुग्ध है। स्वामी जी अपने प्रवचन में गीता के श्लोकों को उद्धृत करते हैं। वे विश्वास के स्थान पर उपलब्धि पर विशेष जोर दे रहे हैं।

मार्गरिट नोबल स्वामी जी के गुरुत्व से पूरी तरह आकर्षित थी। १६ और २३ नवम्बर को दो और प्रवचनों से श्रद्धा गहरा गई, विश्वास जाग्रत हुआ। नास्तिकता आस्था में बदलने लगी, जिज्ञासा ज्ञान के आश्रय में समाधान पाने लगी। 'परन्तु' और 'क्यों' की तर्क–पतवार सम्हाले जिज्ञासा की नौका ज्ञान–धारा पर बह चली।

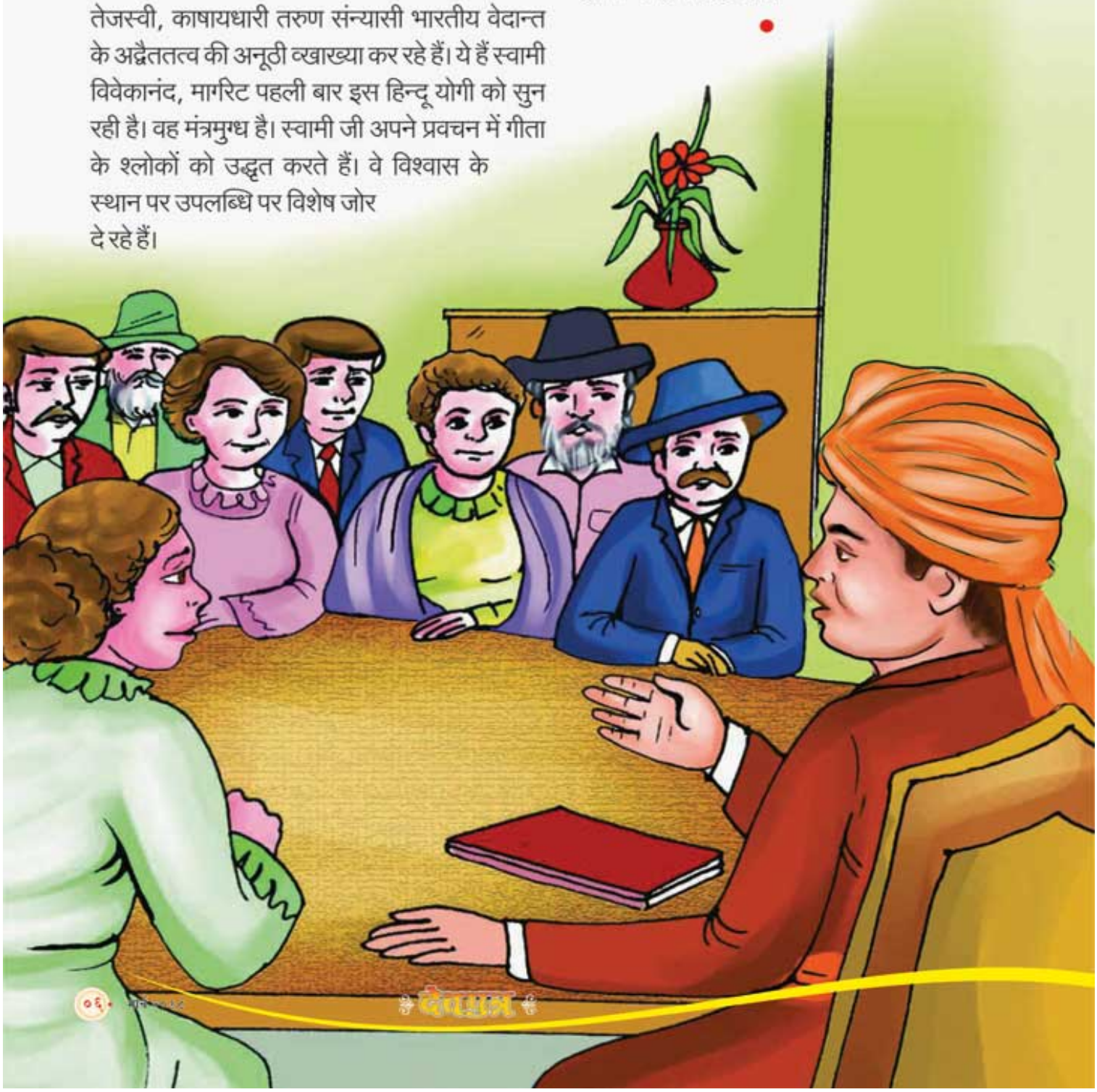

भारत से प्रेम करो भारत की सेवा करो

स्वामी जी ने आह्वान किया ''मैं मेरे देश में वहाँ की स्त्रियों की प्रगति हेतु कार्यक्रम की रूपरेखा बना रहा हूँ। मैं सोचता हूँ उस कार्य में तुम मुझे बहुत मदद कर सकोगी।''

प्रश्न था ''जिस देश में लोग अपनों से ही छुआछूत करते हैं वे एक विदेशी और विधर्मी महिला से अपनी पुत्रियों को शिक्षित होने देंगे?''

और विवेकवाणी ने संशय को उखाड़ फेंका। वे कह रह थे– ''भारत को आज एक शेरनी की जरूरत है। भारत में अभी ऐसी महिलाएँ नहीं हैं। इसलिए उसे ऐसी महिलाएँ विदेश से उधार लेना होंगी। तुम्हारी शिक्षा, शुभचिंतन, पवित्रता, अगाध प्रेम, दृढ़निश्चय तथा सबसे अधिक गरम खून कुछ ऐसी विशेषताएँ हैं जिनकी वजह से आज भारत को तुम जैसी महिला की जरूरत है।''

और चेताया भी– ''आने से पहले खूब विचार कर लेना। हाथी के दांत बाहर आने के बाद पुनः वापस नहीं जाते उसी भांति मनुष्य के वचन भी है।''

स्वामी जी ने उसे मूल मंत्र दिया

Love India Serve India अर्थात् भारत से प्रेम करो। भारत की सेवा करो।

भारत माँ ने गोद ली यह बेटी

२८ जनवरी, १८९८। ५ जनवरी को मोम्बासा, सिनाई, एडन होते हुए मार्गरिट के जहाज ने चैन्नई (मद्रास) का तट छुआ। मानो विदेशी धरा पर जन्मी किसी बेटी ने पहली बार जिसने उसे गोद लिया ऐसी पालक–माता का पट (आंचल) छुआ।

मद्रास से चलकर काली माँ की योजना से वह जा पहुँची कोलकाता बन्दरगाह पर जहाँ स्वयं स्वामी जी खड़े थे उसके स्वागत के लिए। जैसे 'संकल्प' अपनी 'क्रियाशक्ति' से मिलने को आतुर हो।

कोलकाता में पर्यटन योग्य कई स्थल थे, दर्शनीय कई इमारतें परन्तु इन सबको देखते हुए भी न देखकर मार्गरिट उत्सुक थी वहाँ के हिन्दू घरों को देखने–समझने के लिए।

दक्षिणेश्वर तीर्थ में

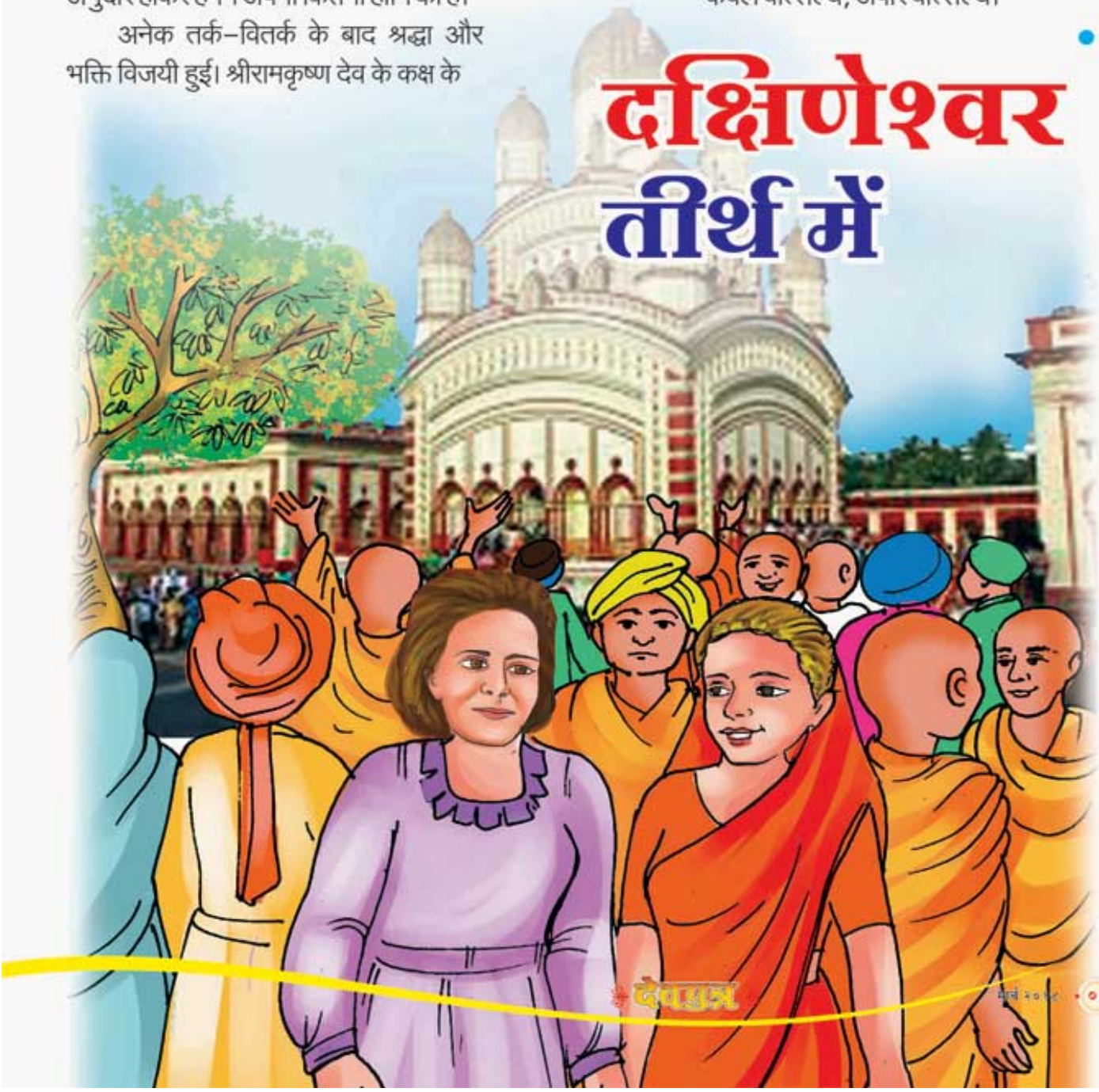

२२ फरवरी १८९९। श्री रामकृष्ण देव का जयन्ती दिवस था लेकिन जयंती महोत्सव का सार्वजनिक समारोह आयोजित था २८ फरवरी को। असीम उत्साह, अपार श्रद्धा, भारी चहल पहल। मार्गरिट ने कु. मूलर के साथ दक्षिणेश्वर के उद्यान वाले मंदिर में प्रवेश की उत्सुकता प्रकट की किन्तु वहाँ अहिन्दुओं और विदेशी महिलाओं का प्रवेश निषेध था। वे पंचवटी के पास रुक गईं। कई लोगों को कु. मूलर के भगवा साड़ी पहने होने पर भी आपत्ति थी। कहीं अति उदार और कहीं अत्यंत अनुदार होकर हमने अपनी कितनी हानि की है।

अनेक तर्क–वितर्क के बाद श्रद्धा और भक्ति विजयी हुई। श्रीरामकृष्ण देव के कक्ष के द्वार खुले, मार्गरिट ने अपनी संगिनी के साथ आनन्द से आंसू बहाते हुए उस तीर्थ में प्रवेश पाया।

यहीं उनकी भेंट हुई 'गोपाल की माँ' से। अघोरमणि देवी श्री रामकृष्ण देव में अपने आराध्य बालकृष्ण का दर्शन करती थी, उसी भाव से उनकी सेवा करती। रामकृष्ण थे उसके बालकृष्ण गोपाल और वह उनकी माँ। उनका नाम ही हो गया था 'गोपाल की माँ'। यह माँ अपनी इस विदेशी पुत्री से मिली तो देश–विदेश, जाति–पंथ, रूप–रंग और भाषा के सारे भेद मिट चुके थे शेष था तो केवल वात्सल्य, अपार वात्सल्य।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दिवस
Day of days

१७ जुलाई १८९८। श्रीरामकृष्ण देव की आध्यात्मिक लीलाओं की अनन्य सहचरी, स्वामी विवेकानंद की गुरु माता जिन्हें भक्तगण श्री श्रीमाँ कहा करते थे। उन सारदामणि देवी के दर्शन करने पहुँची भारत माँ की दत्तक पुत्री मार्गरिट, श्रीमती बुल और कु. मेक्लाउड के साथ।

सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ते हुए श्रीमाँ ने इस गोरांग विदेशी बेटी को 'मेरी बेटी' कह कर दुलराया। वे एक दूसरे की भाषा नहीं जानती थीं। लेकिन सच्ची श्रद्धा और आत्मीयता का प्रवाह कब किसी भाषा–बंधन से रुक पाया है। माँ बेटियों ने साथ बैठकर भोजन किया।

मार्गरिट ने अपनी दैनंदिनी में इस अविस्मरणीय दिवस को दर्ज किया तो उस पृष्ठ को शीर्षक दिया

day of days और .....

सबसे आनन्दमय प्रभात

२५ मार्च १८९८। बेलूड़ मठ। स्वामी जी ने मार्गरिट से शिवपूजन करवाया। अनन्त श्रद्धा ने पाया अपार आनन्द।

शिवार्चना के पश्चात् स्वामी जी का आवेगमय आदेश गूंजा, वे मठ में स्थित बुद्ध प्रतिमा की ओर निर्देश कर कह रहे थे ''जाओ और और उस महान व्यक्ति का अनुसरण करो जिसने पाँच सौ बार जन्म लेकर अपना जीवन लोक–कल्याण के लिए समर्पित किया और बुद्धत्त्व पाया।''

मार्गरिट ने अपनी अंजली में भरे खिलखिलाते सुरभित पुष्प बुद्ध के चरणों में समर्पित किए।

स्वामी जी उसे मंगलमय नाम दिया 'निवेदिता'। वे सन्यासिनी बनना चाहिती थीं लेकिन प्रतीक्षा अभी शेष थी।

आनन्द विभोर निवेदिता ने दैनंदिनी में लिखा– जीवन का सबसे आनंदमय प्रभात।

ठीक एक वर्ष के बाद उन्हें दीक्षा मिली– नैष्ठिक ब्रह्मचारिणी के रूप में।

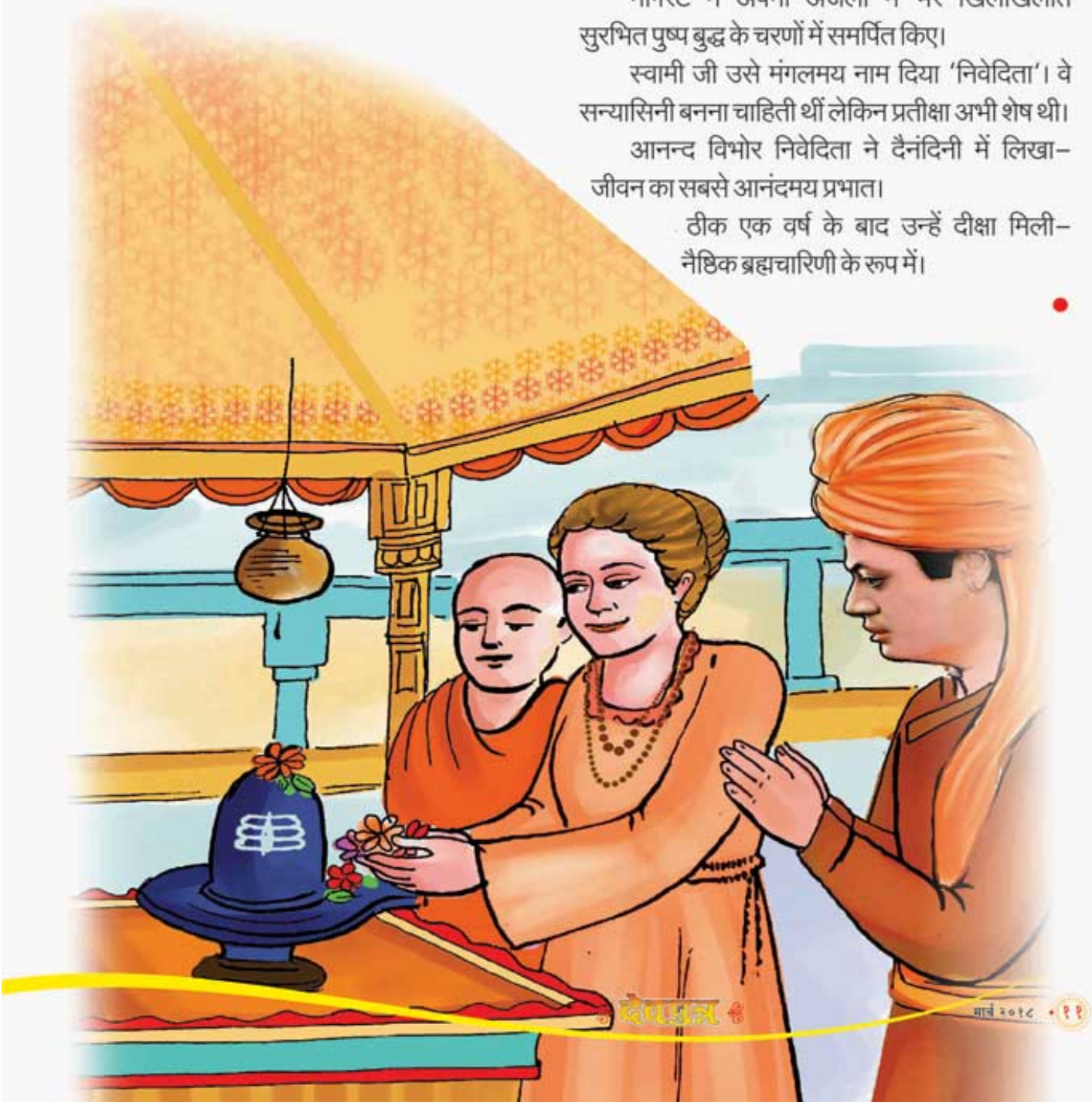

कोलकाता के बाग बाजार की १६ नं. बोसपाड़ा लेन। निवेदिता के पहले बालिका विद्यालय की योजना आकार ले रही थी। निवेदिता भावपूर्ण ओजस्वी शब्दों में उपस्थित लोगों से अपनी बालिकाओं को इस विद्यालय में भेजने का आव्हान कर रहीं थीं। पीछे बैठे स्वामी जी इतने उत्साहित थे कि लोगों को धक्का दे देकर हँसते हुए कहने लगे '' उठो! उठो! केवल बालिकाओं के पिता होने से ही काम नहीं चलेगा। राष्ट्रीय भाव से उनकी शिक्षा–दीक्षा की व्यवस्था में तुम सबको सहयोग करना होगा। बोलो, हाँ हम लोग तैयार हैं। हम लोग तुम्हे बालिकाएँ देंगे।''

फिर हरिमोहन बाबू से जोर से कहा'' तुमको देना ही होगा।'' और उनकी ओर से स्वयं ही कह दिया'' ठीक है **मिस नोबल!** ये सज्जन अपनी बच्ची आपको दे रहे हैं।''

निवेदिता छोटी बच्ची की तरह हर्षविभोर हो ताली बजा बजा कर नाचने लगी।

१३ नवम्बर १८९८। श्री श्रीमाँ के कर कमलों से हुआ निवेदिता के पहले बालिका विद्यालय का शुभारम्भ।

उठो! उठो!

अंग्रेजी माध्यम नहीं

निवेदिता एक सुसभ्य, संस्कारित, सुशिक्षित, अंग्रेज महिला थी। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर का विचार था वे उनकी छोटी पुत्री के लिए अंग्रेजी माध्यम से शिक्षित करने हेतु उपयुक्त शिक्षिका होंगी। किन्तु निवेदिता का अभिमत सुस्पष्ट था – ''बाहर से कोई शिक्षा निगलने से क्या लाभ? जो जातिगत निपुणता एवं व्यक्तिगत विशेष क्षमता प्रत्येक मनुष्य के अन्दर है उसे जाग्रत करना ही यथार्थ शिक्षा है।'' वे भारतीय बालिकाओं को अंग्रेजी भाषा और संस्कृति सिखाने नहीं आई थीं।

कालान्तर में यही विचार 'शांति निकेतन' की स्थापना में प्रेरक बना।

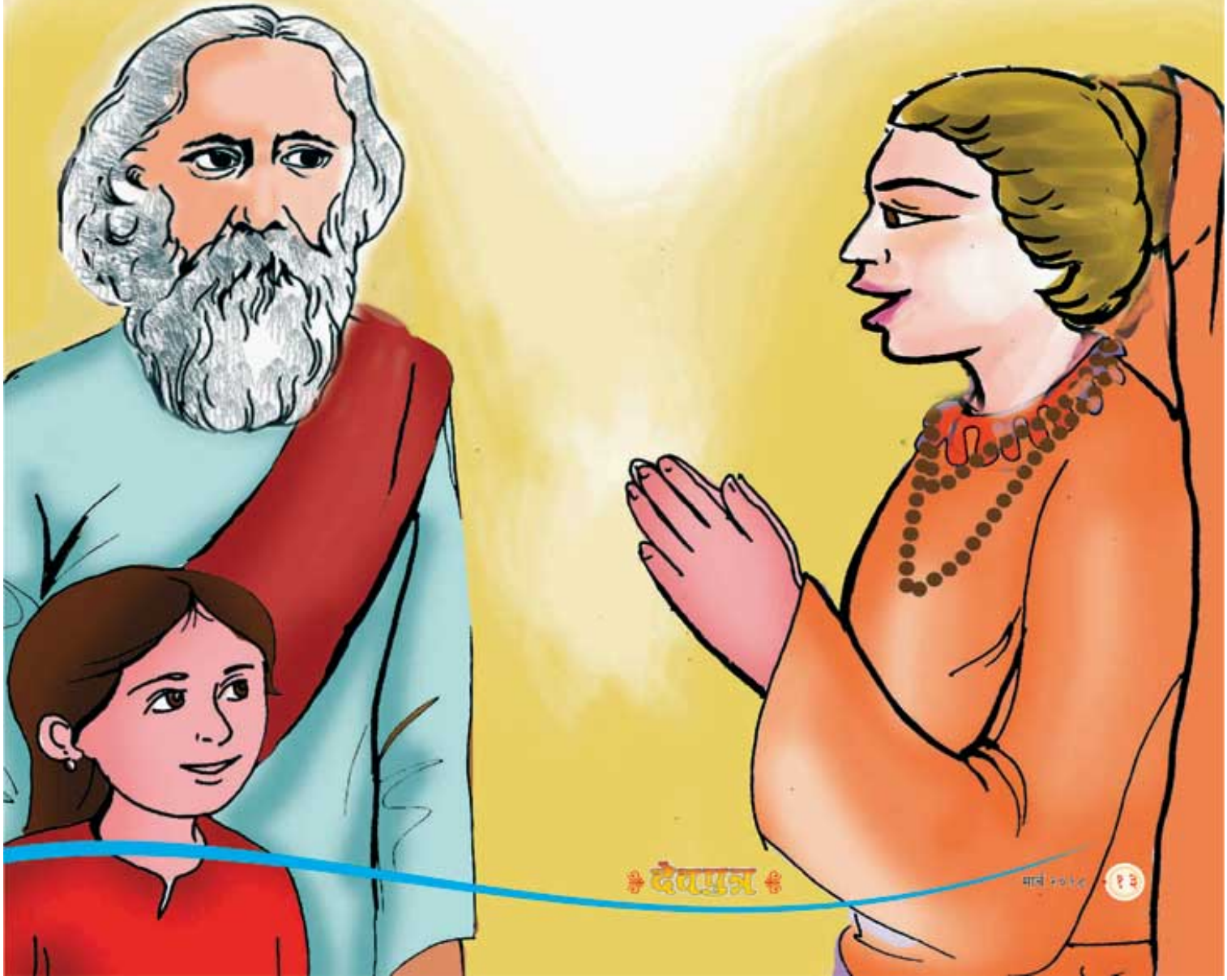

अप्रतिम सेवा

सन् १८९८। कोलकाता भयानक रूप से प्लेग की चपेट में था। स्वामी विवेकानन्द ने इसकी रोकथाम और पीड़ितों की सेवा के लिए एक कार्य दल गठित किया। स्वामी सदानंद कार्याध्यक्ष बनाए गए और सचिव के रूप में महत्वपूर्ण दायित्व सौंपा गया निवेदिता को।

सफाई कर्मचारियों के साथ निवेदिता के रूप में कोलकाता के बाग बाजार और श्याम बाजार की बस्तियों में सेवा और स्वच्छता में जुटी साक्षात् दशभुजा विचरण कर रही थीं। वे स्वयं अपने हाथों कूड़े के बड़े–बड़े ढेर हटा रही थीं, अपने भावपूर्ण भाषणों से युवा विद्यार्थियों को सेवा की प्रेरणा दे रहीं थीं। लोग इन्हें देख लज्जित होकर उनका सहयोग करने को विवश थे।

सुविख्यात चिकित्सक डॉ. आर.जी. कर ने लिखा– कैसे वे इस छूत की बीमारी से ग्रस्त, मरणासन्न, तथाकथित नीची जाति के उस बच्चे की सेवा में जुट गईं। स्वयं उसके घर की सफाई की, दीवारों पर सफेदी की, उस सीलन भरे घर में उसे अपनी गोद में लिए बैठी रहीं। मालूम था इसका बचना असंभव है।

मरते–मरते बच्चा उन्हें ही पकड़कर आर्तस्वरों में पुकार रहा था 'माँ, माँ'।

सन् १९०२ की जुलाई का चौथा दिन। निवेदिता ने रात्रि में स्वप्न देखा– श्रीरामकृष्ण देव पुनः अपना शरीर त्याग रहे हैं।

प्रातः स्वामी सारदानंद का मठ से पत्र संदेश मिला। 'स्वामी का महाप्रयाण हुआ है।' वे तुरंत बेलूड़ मठ पहुँची किंकर्तव्य विमूढ़–सी फिर स्वामी जी के मस्तक के पास बैठी उन्हें पंखा झलने लगीं एकदम मौन।

संध्या छः बजे चिता स्वामी जी की देह को आत्मसात कर ठण्डी हो रही थी। 'निवेदिता' उसे अपलक देख रही थीं उसकी बहुत इच्छा थी स्वामी जी का अंतिम समय ओढ़ा भगवा वस्त्र अपने पास रख लें लेकिन उचित अनुचित का असमंजस होने से यह नहीं हो सका था।

उन्हें लगा कोई अदृश्य शक्ति उनकी कमीज की बाँह पकड़ कर खींच रही है। देखा तो पैरों के पास उसी वस्त्र का एक टुकड़ा जाने कैसे वहाँ आ गया था। निवेदिता को लगा स्वामी जी जाकर भी उसके साथ हैं, उसने वह वस्त्र का टुकड़ा उठाकर सहेज लिया एक अमूल्य निधि की तरह।

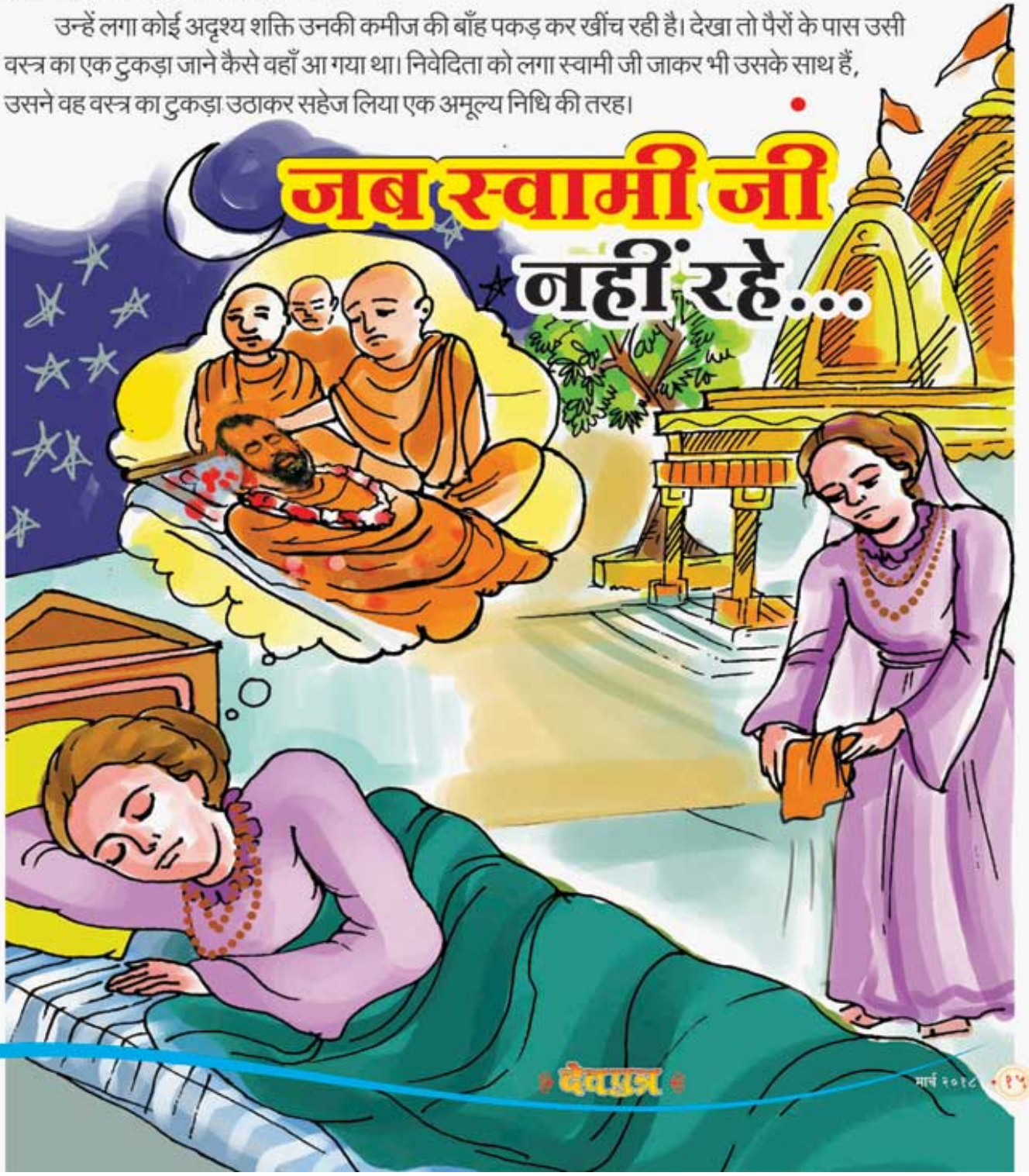

वीर बनो!

१९०४ में वे पटना में छात्रों को बता रहीं थीं ''बालकों के मुखमण्डल पर अपरिमेय शांति देखकर मैं दुखी होऊंगी। मैं चाहती हूँ तुम लोग मल्लयुद्ध करो, मुक्केबाजी करो, तलवार चलाओ।''

उनके उद्‌गार थे–

''केवल बलिष्ठ होना श्रेयस्कर नहीं है वीर होना होगा।.....जब संग्राम की पुकार होगी उस समय सोए मत रहना।''

वे पुरुषों को राष्ट्रीयता और महिलाओं को सामाजिकता की शिक्षा देने की आवश्यकता पर बल देती थीं।

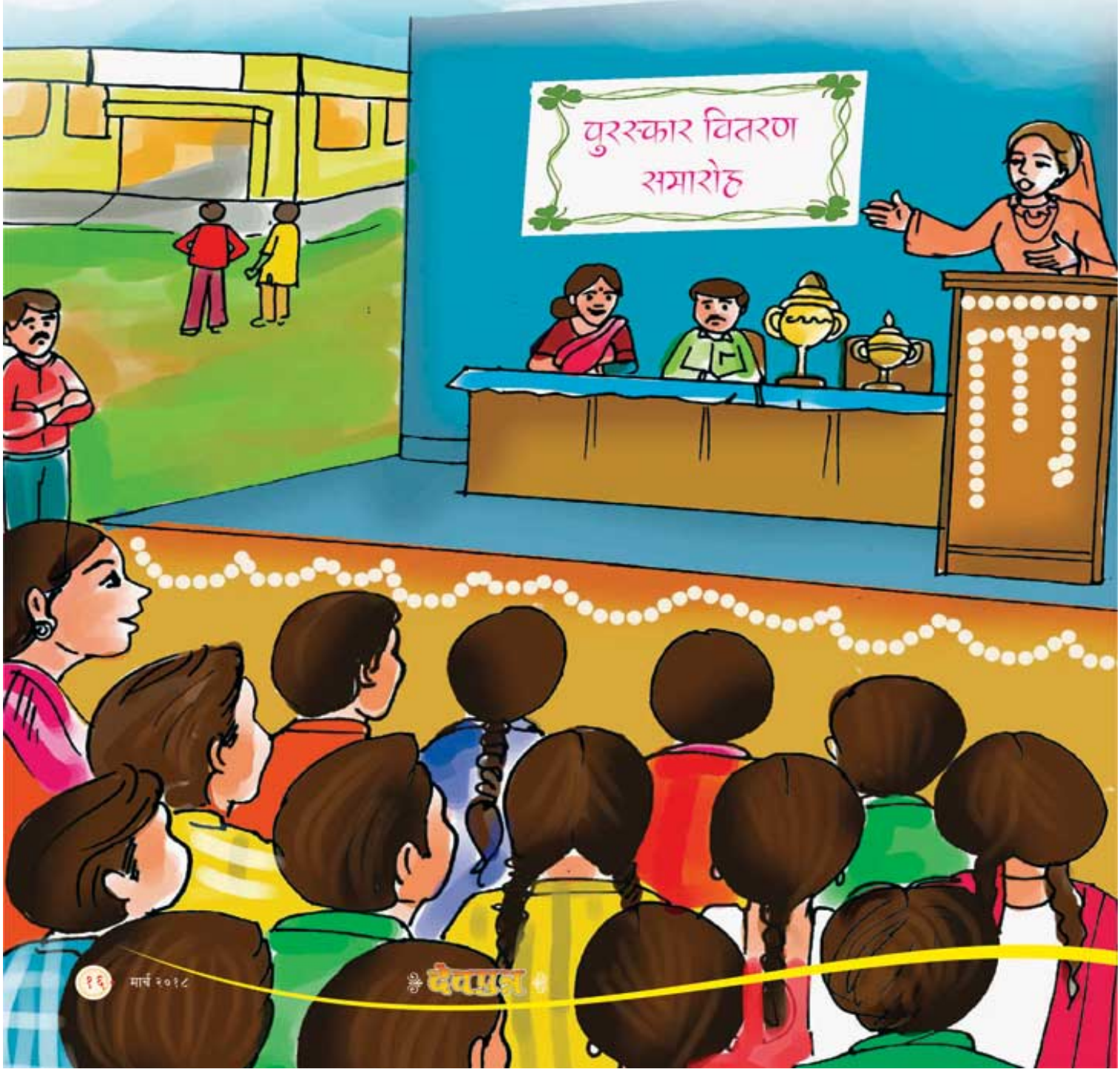

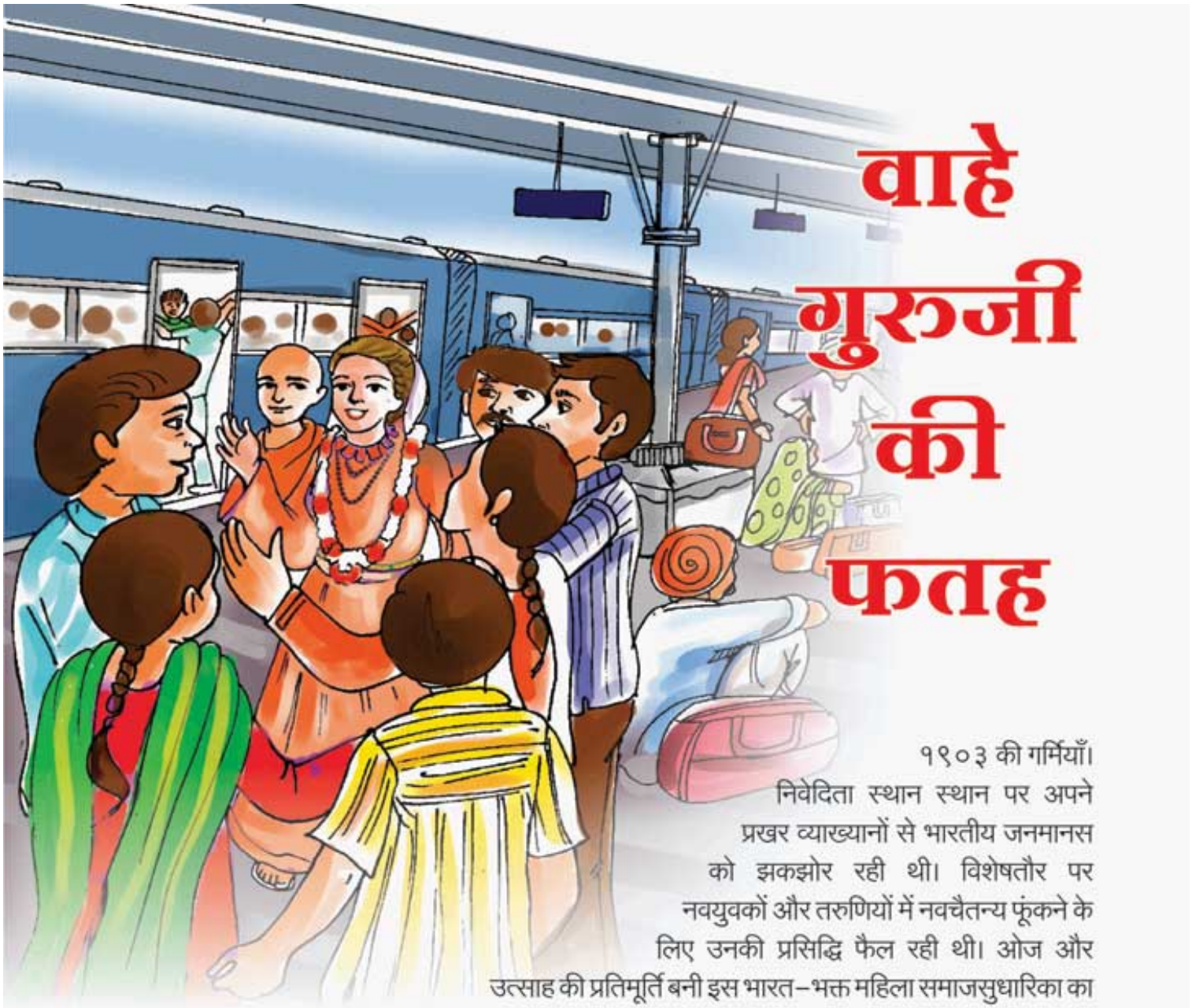

वाहे गुरुजी की फतह

१९०३ की गर्मियाँ। निवेदिता स्थान स्थान पर अपने प्रखर व्याख्यानों से भारतीय जनमानस को झकझोर रही थी। विशेषतौर पर नवयुवकों और तरुणियों में नवचैतन्य फूंकने के लिए उनकी प्रसिद्धि फैल रही थी। ओज और उत्साह की प्रतिमूर्ति बनी इस भारत–भक्त महिला समाजसुधारिका का स्थान–स्थान पर भव्य स्वागत भी हो रहा था।

उस दिन जब वे पश्चिम बंगाल के मैदिनीपुर की यात्रा पर थी रेल्वे स्टेशन पर 'विदेश से आयी निवेदिता जी इससे प्रसन्न होंगी' ऐसा सोचकर उत्साहित युवकों–युवतियों ने नारा लगाया–Hip Hip Hurray निवेदिता प्रसन्न न हुई उल्टे सबको शांत करते हुए कहने लगी– ''यह अंग्रेजों की विजय और उल्लास की ध्वनि है। भारतीयों को इसका व्यवहार कभी नहीं करना चाहिए।''

हाथ उठाया और सबको तीन बार दुहराने को कहा– '' वाहे गुरुजी की फतह, वाहे गुरुजी का खालसा।

विचारों के साथ आचारों में भी वे वीर–भावों को ही प्रोत्साहित करती। युवकों के लिए उनकी प्रेरणा से अखाड़े खोले गए। वे स्वयं उनका उद्घाटन ही नहीं करतीं स्वयं तलवार चलाकर, मुद्गर भांजकर, लाठी घुमाकर युवकों को प्रेरित भी करती। यहाँ तक कि एक दो महिलाओं को तो उन्होंने बन्दूक चलाना भी सिखाया।

साहस का अभाव क्यों?

एक प्रसिद्ध साहित्यकार और ब्रह्मचारी गणेश महाराज उस दिन निवेदिता के साथ गंगातट पर टहल रहे थे। अचानक एक बलिष्ठ सांड उनकी तरफ क्रोधित होकर लपका। साहित्यकार महोदय तो भागकर एक ओर चल गए लेकिन गणेश महाराज ने आगे बढ़कर उसे भगा दिया।

तीनों फिर मिले तो निवेदिता ने अचूक व्यंग्य किया ''आज आपने पुरुष जाति का मुख उज्ज्वल किया है। आज का यह कार्य आपके कीर्तिस्तंभ के रूप में याद रहेगा।''

साहस का अभाव निवेदिता को सदैव असहनीय रहता था।

वे लेखकों, साहित्यसाधकों एवं अन्वेषकों का बड़ा सम्मान करती थीं। प्रसिद्ध बांग्ला साहित्यकार श्री दीनेशबाबू की पुस्तक 'बंगला देश का इतिहास' निवेदिता ने रात-दिन परिश्रम करके संपादित की थी। प्रसिद्ध विज्ञानवेत्ता डॉ. जगदीशचन्द्र बसु के शोध ग्रंथों के प्रकाशन में निवेदिता का योगदान अतुलनीय है।

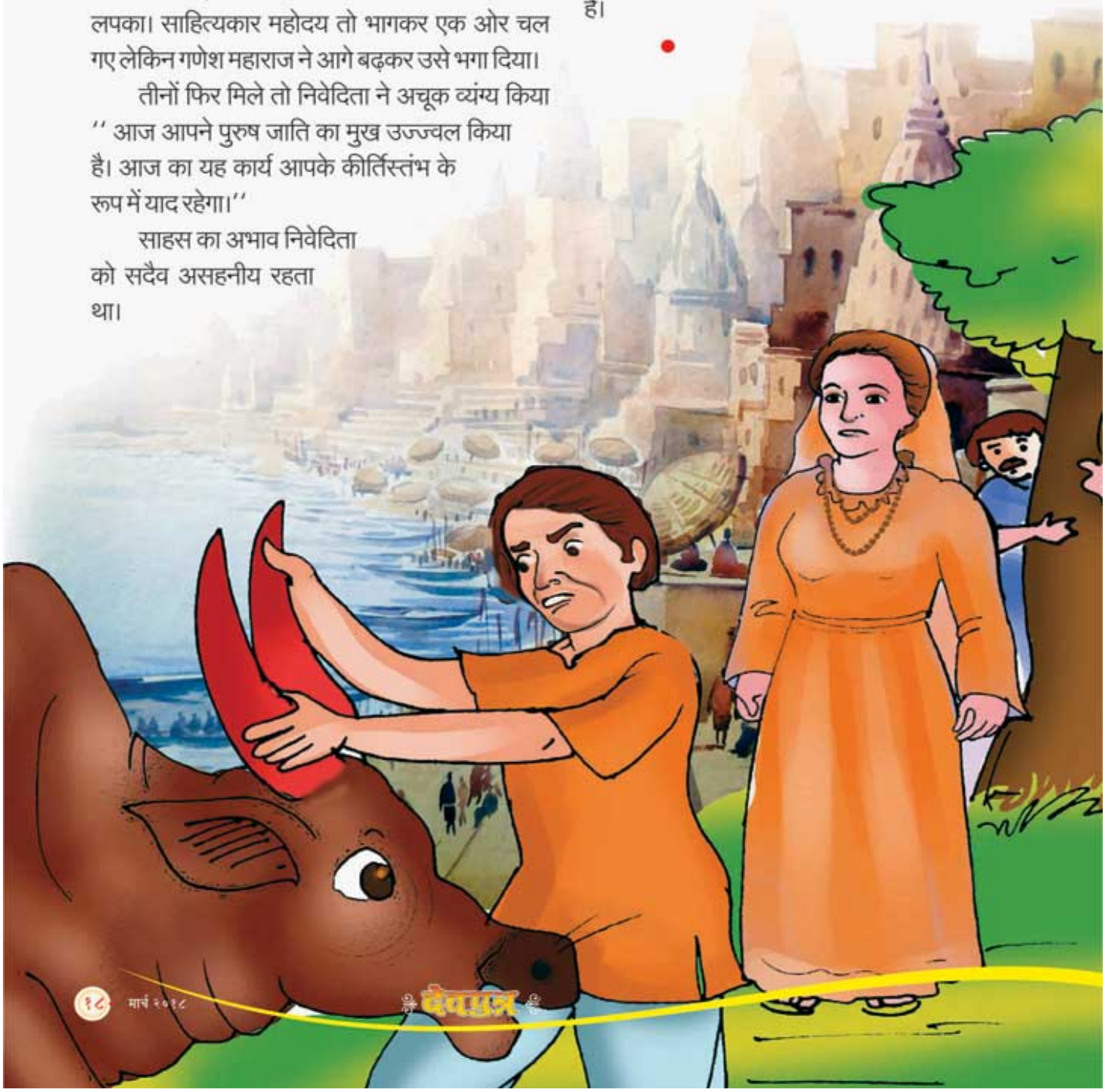

कविता की गहरी परख

एक दिन दीनेश बाबू ने एक कविता दिखाई। कविता में भाव था– कि अन्न और वस्त्र उपलब्ध होने पर भगवान शिव को भिक्षाटन और बाघम्बर पहनने का कष्ट नहीं होगा अतः कपास उगाना और धान पैदा करना आवश्यक है।

कविता पढ़कर निवेदिता कह उठी '' आश्चर्य! आश्चर्य!!'' संभवतः दीनेश बाबू का विचार था विदेशिनी निवेदिता को इस कविता का कितना भाव–बोध हुआ होगा! वे निवेदिता की प्रसन्नता का रहस्य न समझ सके।

बाद में निवेदिता की एक सखी से ज्ञात हुआ कि '' साधारणतः उपासक अपने आराध्य से धन चाहते हैं, स्वास्थ्य चाहते हैं, सुख चाहते हैं। इस कविता में भक्त अपने उपास्य देवता के लिए उनका कष्ट दूर करने के उपाय का चिंतन करता है।'' निवेदिता इसी भाव को ग्रहण कर आनन्दित और चकित थीं।

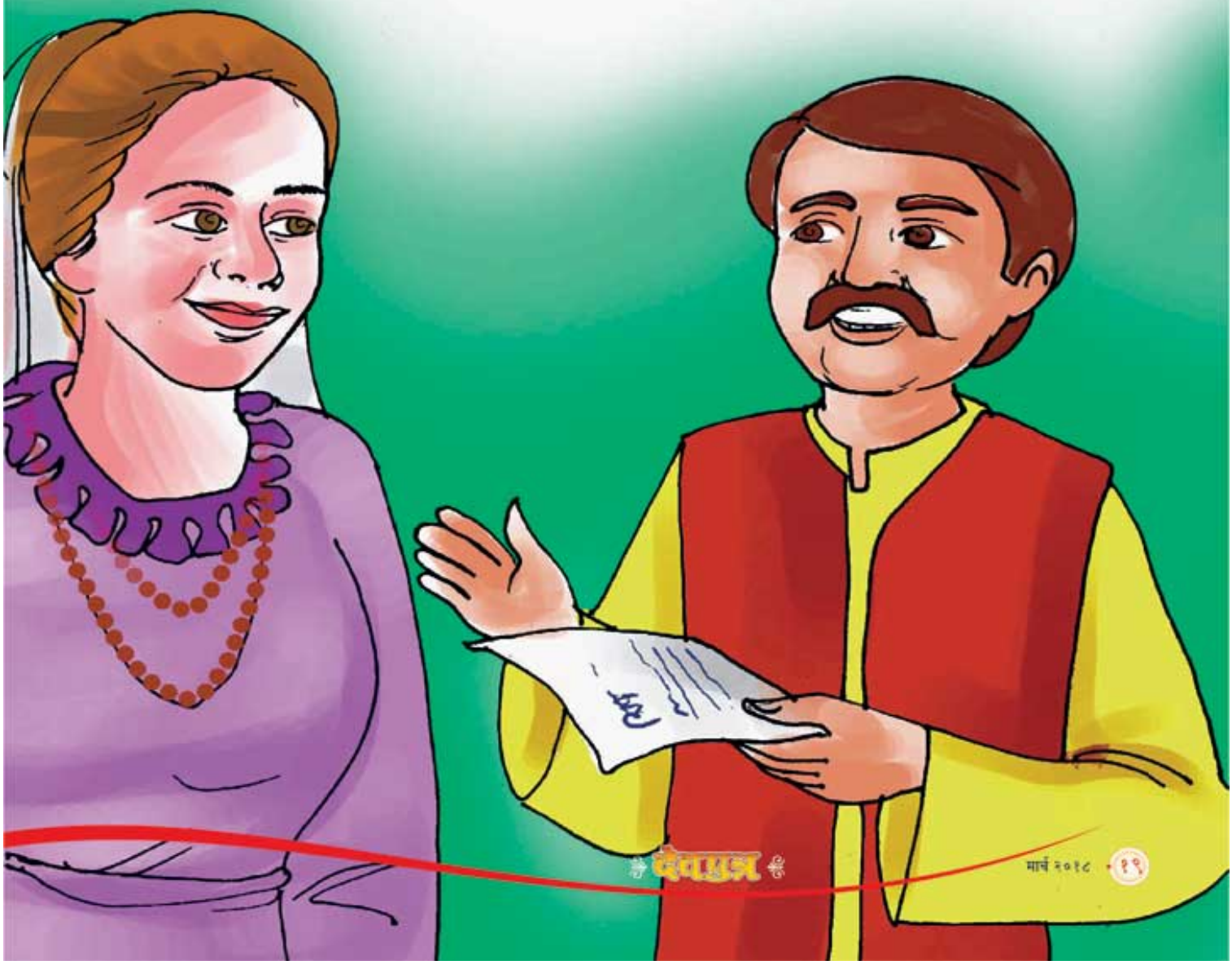

स्वदेशी भाव ही स्वभाव

निवेदिता आचार, विचार, व्यवहार, भाषा, शिक्षा, शिल्प, कला, क्रीडा, संगीत, सज्जा आदि जीवन के सभी क्षेत्रों में राष्ट्रीय–भावों की प्रबल आग्रही थी। स्वदेशी भाव उनका स्वभाव बन गया था और वे प्रत्येक भारतीय को इसी स्वभाव में ढालने का स्वप्न देखती थी। उनके विद्यालय में प्रतिदिन 'वन्देमातरम्' गाना गाया जाता था। प्रत्येक स्वदेशी वस्तु चाहे वह कितनी भी साधारण क्यों न हो– निवेदिता के लिए देवतुल्य आदरणीय होती थी। वे अपनी छात्राओं को राष्ट्रभक्ति पूर्ण भाषण सुनाने कोई अवसर नहीं चुकती थीं।

उस दिन निवेदिता के विद्यालय का द्वार केले के स्तंभों से सजाया गया था, मंगल कलश स्थापित किए गए थे। आनन्दपूर्वक उत्सव मनाने के लिए विद्यालय का अवकाश कर दिया गया था और दिन के उत्सव का उपलक्ष्य था 'अन्दमान के कारागृह से भारतीय स्वातंत्र्य के लिए लड़ रहे कुछ क्रांतिकारी व राजैनैतिक बंदियों की कारावास से मुक्ति का।'

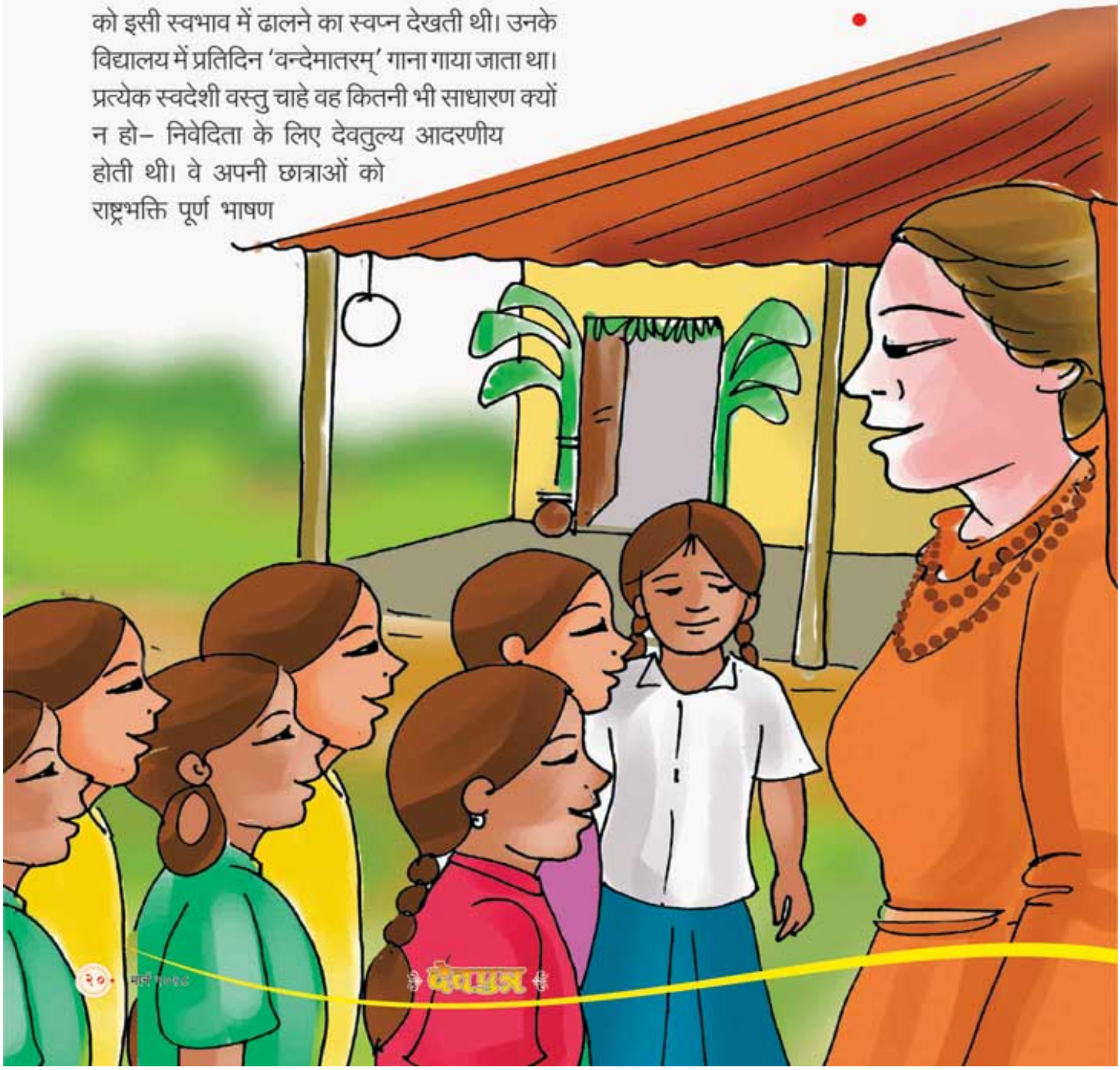

विदेशी होने से इस गौरी महिला पर श्रद्धा होने के बाद भी कई छात्राएं उनका छुआ भोजन नहीं करती थीं।

एक बार वे अपनी विद्यालयीन छात्राओं के साथ संग्रहालय देखने पहुँची। घूमते-घूमते छात्राएं प्यास से बेहाल हो रही थीं। निवेदिता ने नल को मिट्टी से मांझा, गिलास साफ किया। फिर पानी भरकर उस छात्रा को दिया। यह एक विदेशी महिला का छुआ है इसलिए बालिका ने उसे हाथ भी नहीं लगाया। तभी एक अन्य छात्रा ने गिलास उठाया और पानी पी गई, इसलिए कि उनकी श्रद्धापात्र निवेदिता को बुरा न लगे।

निवेदिता इसका बुरा नहीं मानती थीं वे जानती थीं इन छात्राओं में उसके प्रति बहुत प्रेम है श्रद्धा है, लेकिन परम्परगत मान्यताओं के कारण वे ऐसा करती हैं। वे स्वयं किसी की भावना आहत न हो इसकी सावधानी रखती थीं।

मान्यता के प्रति सचेत

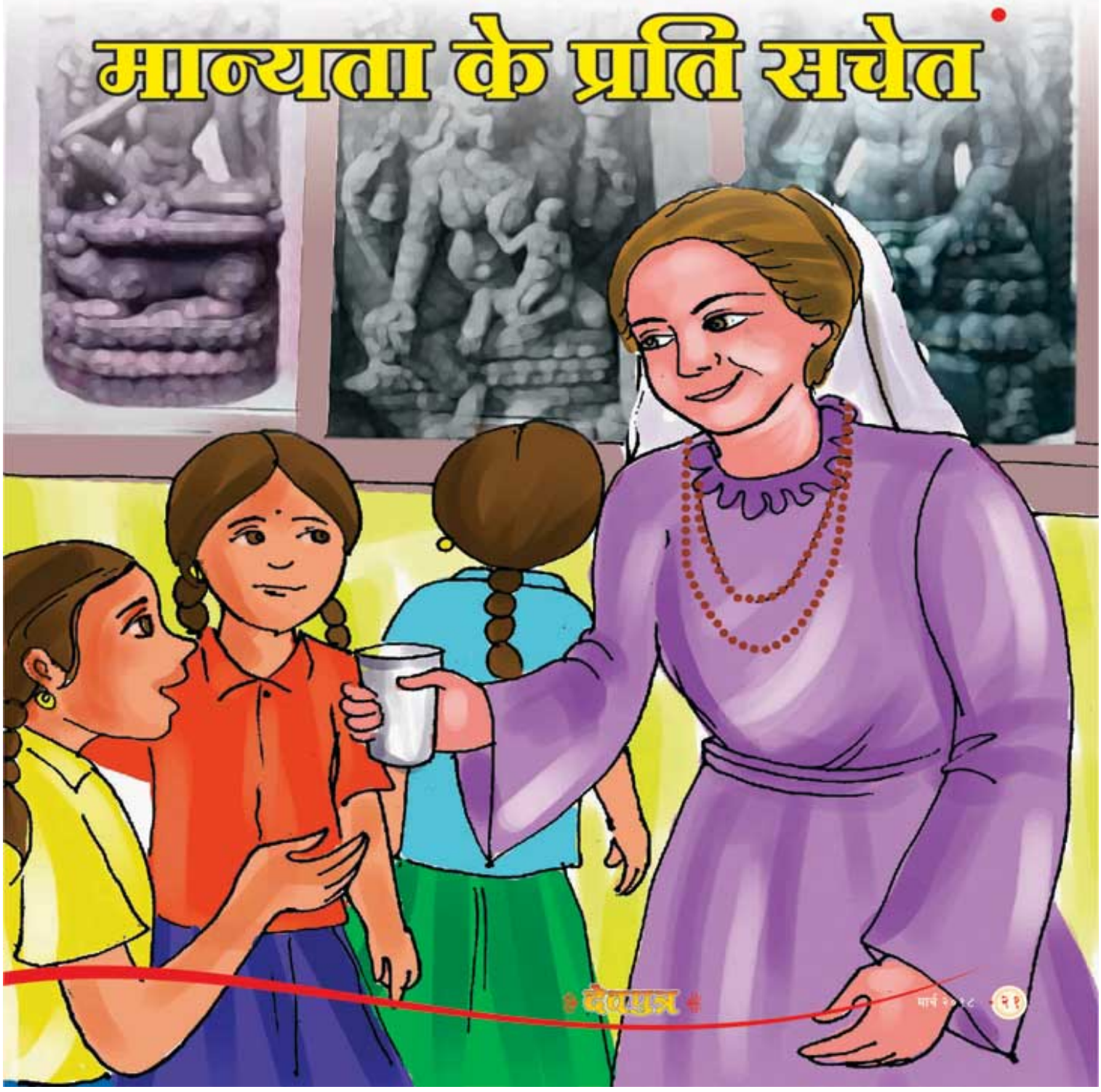

प्रेम से परिवर्तन

उस दिन विद्यालय में पहली बार पूजा थी। पका हुआ अन्न प्रसाद रूप में ग्रहण करने में कई छात्राओं को पथ्य हो सकता है अतः अस्पृश्यता के दोष निवारण हेतु निवेदिता ने फल, खजूर, सूखे मेवे और मिष्ठान्न का प्रसाद ही देवी को निवेदित किया था फिर भी छात्राओं को शाला भवन में वह प्रसाद खाने का साहस न हुआ वे प्रसाद के दोने आंचल में छुपाए अपने घर ले गईं।

प्रेम से बड़ा से बड़ा परिवर्तन संभव है। और यह हुआ जब ऐसे ही एक अन्य अवसर पर छात्राओं के आग्रह पर ही विद्यालय में पूरी–सब्जी बनाई गई। निवेदिता शंकित थी अतः अपनी सहायिका सखी क्रिस्टीन के साथ उस स्थान पर भी नहीं गई जहाँ प्रसाद बन रहा था। लेकिन...

पूजा होते ही वे छात्राएं उनका हाथ पकड़ कर खींच लाईं और फिर सबने एक साथ बैठकर वहीं प्रसाद ग्रहण किया।

तपोपूर्ण कार्यशैली

कोलकाता १६ बोसपाड़ा लेन, अर्थात् निवेदिता का घर भी विद्यालय भी। निवेदिता जिस देश में जन्मी थी वहां वर्षभर ही प्रायः शीतऋतु की सी ठण्डक रहती थी लेकिन निवेदिता का यह कमरा कोलकाता की भीषण गर्मी में भट्टी जैसा तप जाता था। ऐसे में सहारा होता था हाथों से झलने वाला एक पंखा, लेकिन लेखन कार्य करते समय तो उसे झलना संभव नहीं होता। सारा शरीर दहकने लगता मुख मण्डल लाल पड़ जाता। निवेदिता को बीच बीच में विद्यालय की छात्राओं को देखने उठना पड़ता तब उन्हें ध्यान टूटने पर भयानक सिरदर्द का अनुभव होता। वे सिर को अपने हाथों दबाने लगतीं फिर निरंतर चलता रहता।

पुस्तक लेखन से प्राप्त थोड़ी–सी राशि से ही अपना काम और विद्यालय का पूरा खर्च चलाना होता था। स्वयं पर होने वाले व्यय को वे निरंतर कमतर करने का प्रयत्न करती रहतीं। अधिकांश आय भूखों को भोजन और दीनों की सेवा में व्यय की जाती। स्वयं रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने लिखकर प्रमाणित किया था–

''वे विद्यालय का खर्च चन्दे या अतिरिक्त राशि से नहीं अपना पेट काटकर चलाती थीं।''

'वेब ऑफ इण्डियन लाईफ' निवेदिता की लिखी राष्ट्रीयता सम्बन्धी सर्वश्रेष्ठ पुस्तक है। निवेदिता अध्यापन, पर्यटन, भाषण–प्रवचन, सेवा इत्यादि में अत्यंत व्यस्त रहती थीं तथापि बीच बीच में समय मिलते ही उनका लेखन भी चलता रहता था। अनेक बार वे घण्टों बैठकर अपने विषय में डूबी लिखती रहतीं। शिक्षा, संस्कृति, शिल्प, समाज जीवन, नारी उत्थान, सेवा, राष्ट्रीय स्वाभिमान आदि राष्ट्रीयता के पोषक विषयों पर उनके भाव एवं विचार परक लेख प्रकाशित होते रहते। वे भारतमाता की प्रत्यक्ष सेवा तो करती हीं सारस्वत सेवा में भी अग्रणी थीं।

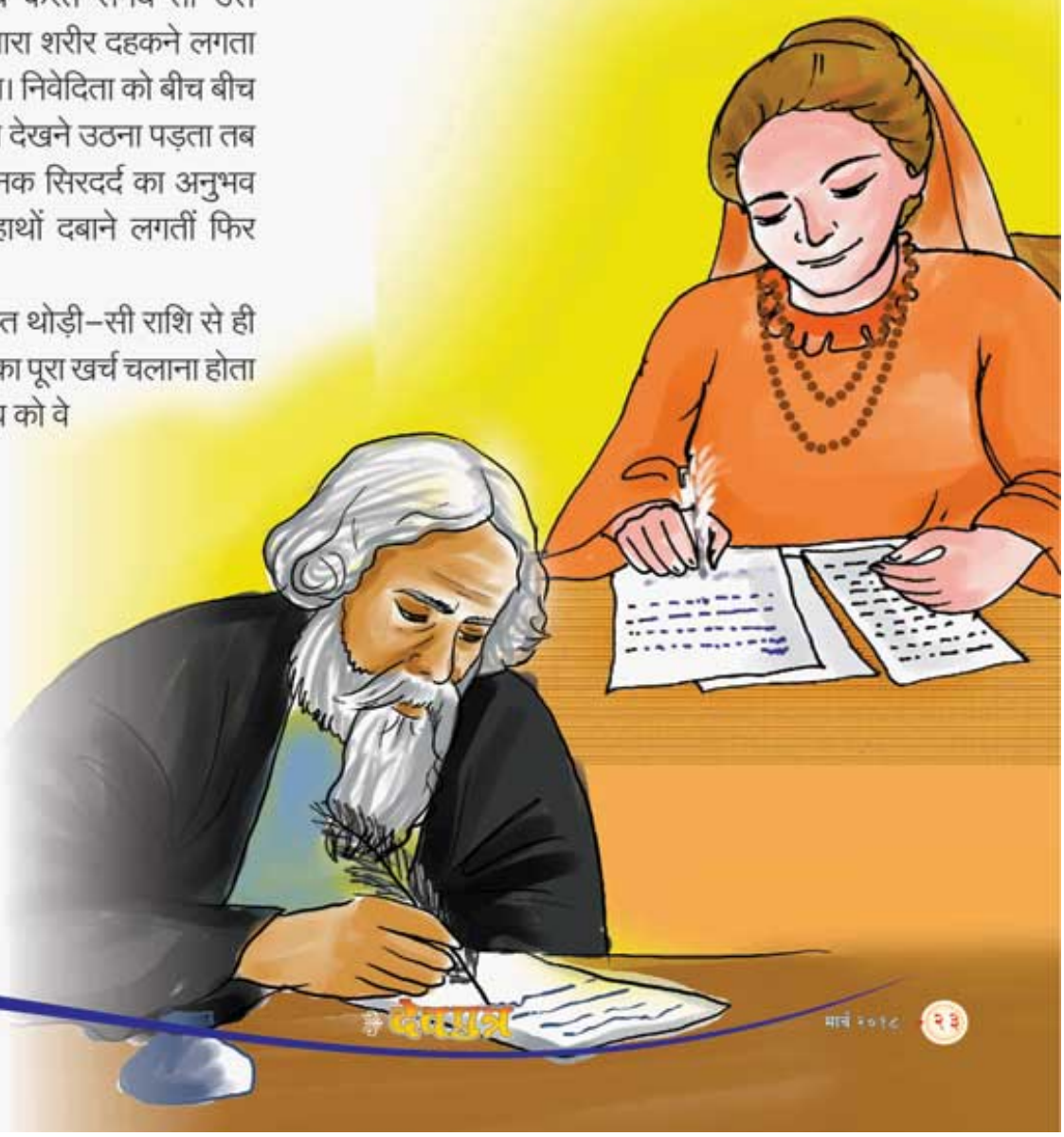

वह अनोखी भिक्षा

उस समय बालिकाओं और विधवाओं को शिक्षा के लिए विद्यालय लाना टेढी खीर था। सामाजिक अंध मान्यताओं और रूढ़ियों की बेड़ियाँ पैरों को जकड़े थीं।

२२-२३ वर्षीय विधवा गिरिबाला घोष का यह प्रसंग उन परिस्थितियों की एक झलक मात्र है। विद्यालय में होने वाले स्तोत्र आदि सुनकर घर वाले उसे शाला भेजने को तो तैयार हुए पर उनका घर था एक संकड़ी गली में जहाँ विद्यालय की गाड़ी पहुँचना बहुत कठिन था और एक विधवा घर से पैदल चलकर गली पार करे यह अनुमति नहीं थी। कई दिन शाला न पहुँचने पर विवशतापूर्वक गाड़ी गली में लाई जाने लगी लेकिन एक दिन गली में टकरा गयी और क्षतिग्रस्त हो गई।

विद्यालय ऐसी हानि सहने की स्थिति में न था। निवेदिता गिरिबाला को भी कैसे छोड़ देतीं? अभिभावकों से भेंट की। निवेदिता उनके पैरों के पास घुटने टेके याचना कर रही थीं ''प्रतिदिन ११ से ४ बजे तक के लिए कृपया यह लड़की मुझे भिक्षा में दीजिए।'' निर्मल मन से की गई निस्वार्थ याचना प्रभावी हुई। भिक्षा मिली। निवेदिता से मिली एक बड़ी सी चादर लपेटे गिरिबाला अब प्रतिदिन संकड़ी गली से निकल विद्यालय जाने लगी थी। ●

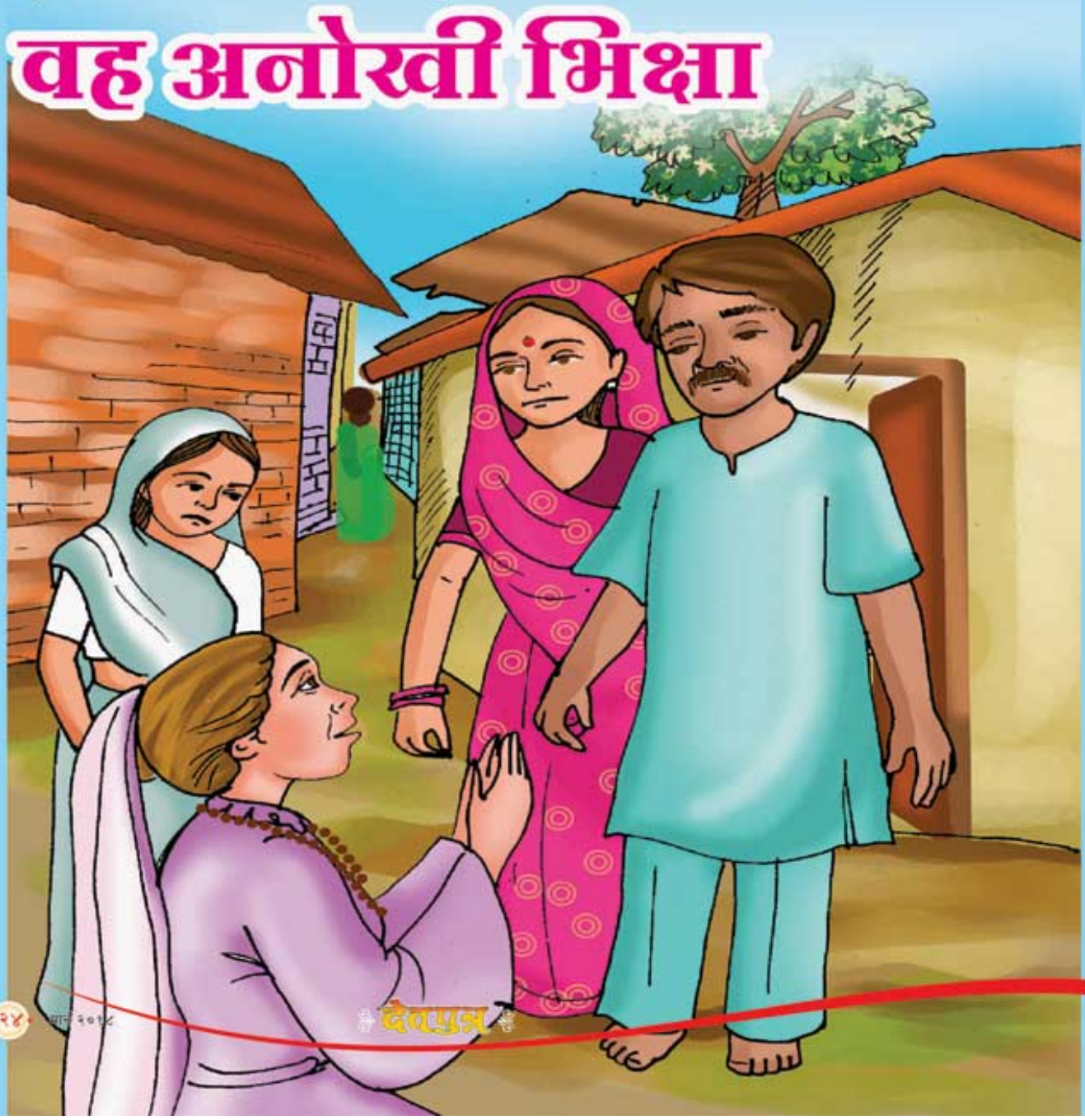

स्वच्छता का संस्कार

विद्यालय में प्रायः गर्मी की छुट्टियों या अन्य लम्बी छुट्टियों के अवसर पर बालिकाओं का सहभोज हुआ करता था। धन का अभाव मन के भावों पर कभी भारी न पड़ा। जैसे भी हो फल मिठाई आदि एकत्र होते और साल के पत्तों के बने दोनों में प्रेमपूर्वक वितरित किए जाते। निवेदिता स्वयं एक टोकरी में दोने रखे यह सब बाँटती फिर स्वयं ही खाली टोकरी लेकर एक स्थान पर खड़ी हो जाती। बालिकाएँ आनंदपूर्वक प्रसाद पाती और खाली दोने इस टोकरी में डालती जातीं।

स्वच्छता का यह संस्कार देते समय निवेदिता की मुस्कान उस समय उस मिठाई से भी मीठी होती थी। ●

पत्थर से कठोर अनुशासन, फूल से कोमल हृदय

अनुशासन और स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों के पालन में निवेदिता चट्टान–सी अटल थीं। विद्यालय की प्रत्येक छात्रा के कपड़े–बिस्तर अलग–अलग होना चाहिए यह उन्हें ठीक लगता था। निवेदिता का कक्ष अन्य कक्षाओं के पास ही था। जहाँ उन्हें बीच –बीच में जाना पड़ता था।

एक बार निवेदिता ने देखा कक्षा छोड़कर एक महिला छात्रा उनके बिछौने पर आराम से सो रही है। वे चुपचाप बाहर आई फिर बोली ''वह आज बहुत थकी है इसलिए कुछ दिनों उसे घर पर रहकर विश्राम करना चाहिए।'' शाला चलते समय किसी छात्रा का यों सोते रहना उन्हें अनुचित लगा। उनका अनुशासन अटल था।

लेकिन वे ममता का भण्डार भी थीं। एक दिन एक छात्रा शाला में ही बहुत बीमार हो गई, उसके मुँह से कमजोरी के कारण खून आने लगा। निवेदिता ने छोटे बच्चे की तरह उसे हाथों में उठाकर अपने बिस्तर पर सुला दिया। छुट्टी होने तक स्वयं उसकी सेवा करती रहीं। उसे तपेदिक (टी.बी.) था। निवेदिता ने उसके उपचार हेतु परिवार की हर संभव सहायता की पर एक दिन वह चल दी मृत्यु के पथ पर लेकिन जाते जाते भी निवेदिता की ममता की निर्मल गंगा उसे पवित्र बना रही थी।

अनुशासन पर दृष्टि दृष्टि से अनुशासन

विद्यालय का नियम था कक्षा में जिससे प्रश्न पूछा जाए वही उत्तर देगा। एक दिन निवेदिता ने एक छात्रा को इंगित कर कोई प्रश्न पूछा लेकिन आतुरता–वश बगैर पूछे ही एक अन्य छात्रा ने उसका उत्तर दे दिया। निवेदिता ने उसे केवल एकटक देखभर लिया। बात छोटी थी पर अनुशासनहीनता को वे कभी छोटा न मानती थीं। छात्रा भी समझ गई पर गलती हो चुकी थी।

फिर बिना कुछ कहे कई दिनों तक उससे कोई प्रश्न पूछा ही न गया। आँखों में आंसू भरे यह सजा उसे असह्य हो रही थी।

कुछ दिनों बाद एक घर में पूजा के अवसर पर विद्यालय के बाहर उनका मिलना हुआ। निवेदिता की दृष्टि में उसे न उपेक्षा दिखी न नाराजगी। ''सिस्टर'' स्नेह के आकर्षण में बंधी वह अपनी शिक्षिका से लिपट गई थी। निवेदिता का ममता भरा हाथ उसे सहला रहा था। क्षमादान मिल चुका था। आज उस छात्रा को अपनी निवेदिता सिस्टर सबसे सुन्दर लग रही थी सबसे मनमोहनी।

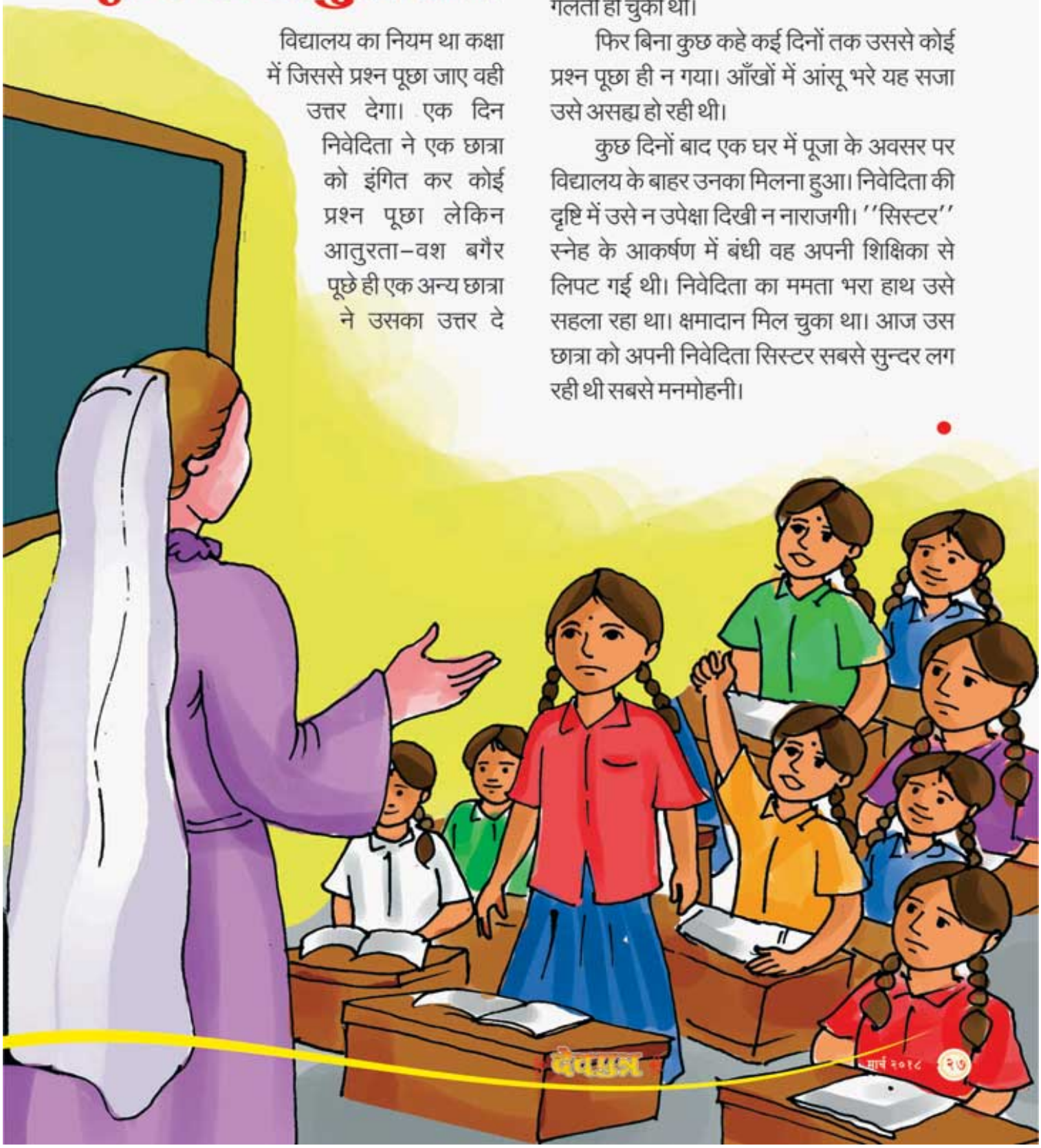

सबके लिए ममतामयी

निवेदिता सच्चे अर्थों में भारत सेविका थीं। वह शिक्षिका मात्र न थीं इसीलिए उसकी ममता केवल अपनी छात्राओं के लिए नहीं होती थी।

अपरिचित व्यक्तियों, दीन-दुखियों एवं अभाव ग्रस्त लोगों यहाँ तक की पशु-पक्षियों तक से उनका व्यवहार अत्यंत ममतालु होता था। किसी पशु पर भी कोई अत्याचार उन्हें दहला देता था। विद्यालय की घोड़ागाड़ी पर वे प्रायः इसलिए नहीं चढ़तीं कि घोड़े को कष्ट होगा।

प्रवचन के दौरान एक बिल्ली बार-बार व्यवधान कर रही थी 'गोपाल माँ' ने उसे गले से पकड़ कर बाहर फेंकने को उठाया। निवेदिता चिल्ला उठी। ''गोपाल माँ! मृत्यु! मृत्यु!'' बांग्ला बोलने में असुविधा भी पर वह मर जाएगी। यह उन्होंने समझा दिया था।

जुलाई १९०६। पूर्वी बंगाल भयानक अकाल के गाल में था। निवेदिता कुछ ही समय पूर्व भयंकर मस्तिष्क ज्वर के आघात से उबरी थीं। पर वे अपने लिए बची ही कहाँ थी वे तो निवेदिता थी राष्ट्रदेवता के लिए।

निवेदिता दौड़ पड़ी सेवा की साकार देवी बनकर आपदाग्रसित दरिद्रनारायणों की सेवा करने। ●

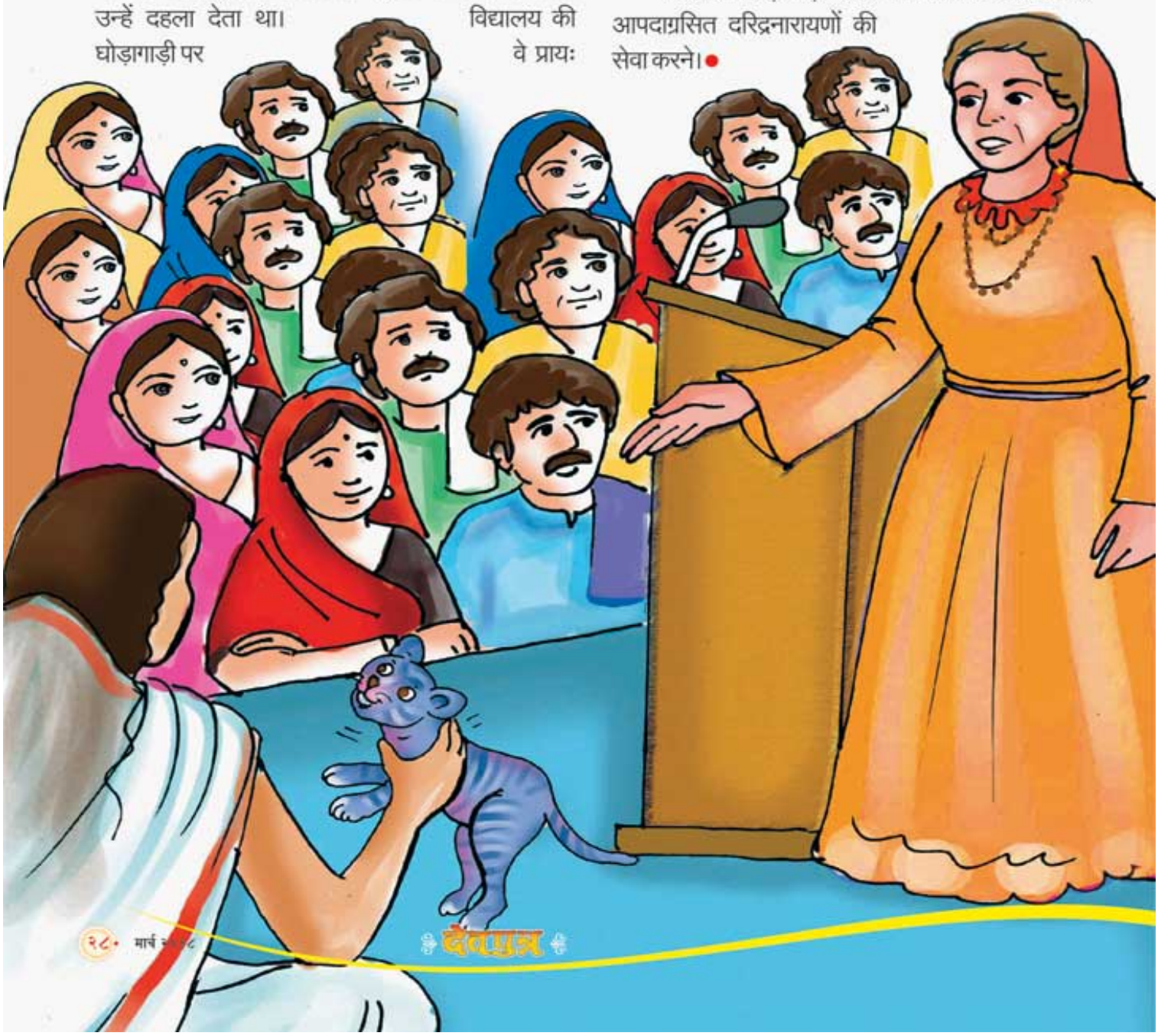

भारत की रानी कौन?

''भारत की रानी कौन है?'' निवेदिता ने पूछा।

''महारानी क्वीन विक्टोरिया।'' छात्राओं ने उत्तर दिया। तब भारत उन्हीं की दासता के जाल में जो फंसा था, उत्तर सहज ही था।

निवेदिता दुःख और क्रोध के वेग से असहज हो उठी। वे धिक्कारते हुए बोली ''इग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया कभी भी तुम्हारी रानी नहीं हो सकती। तुम्हारी रानी सीता है। सदा के लिए भारवर्ष की रानी सीता है।''

ऐसे ही एक दिन पूछा ''महाभारत में वर्णित नारियों में सबसे वीर कौन थी?

अलग-अलग उत्तर मिले- ''द्रोपदी, ''सुभद्रा'', ''कुन्ती।''

निवेदिता ने समझाया- ''सबसे वीर थी गांधारी। पति के अंधे होने से स्वयं भी आँखों पर पट्टी बांधे रही पर कभी भी पति के अनुचित कार्य का समर्थन नहीं किया। पुत्र के प्रति वह असीम ममतामयी माँ थी पर युद्ध हेतु जाते समय दुर्योधन को उससे विजय का आशीष नहीं मिला। उसे सचेत किया- ''जिसके पक्ष में धर्म है विजय उसी की होगी।''

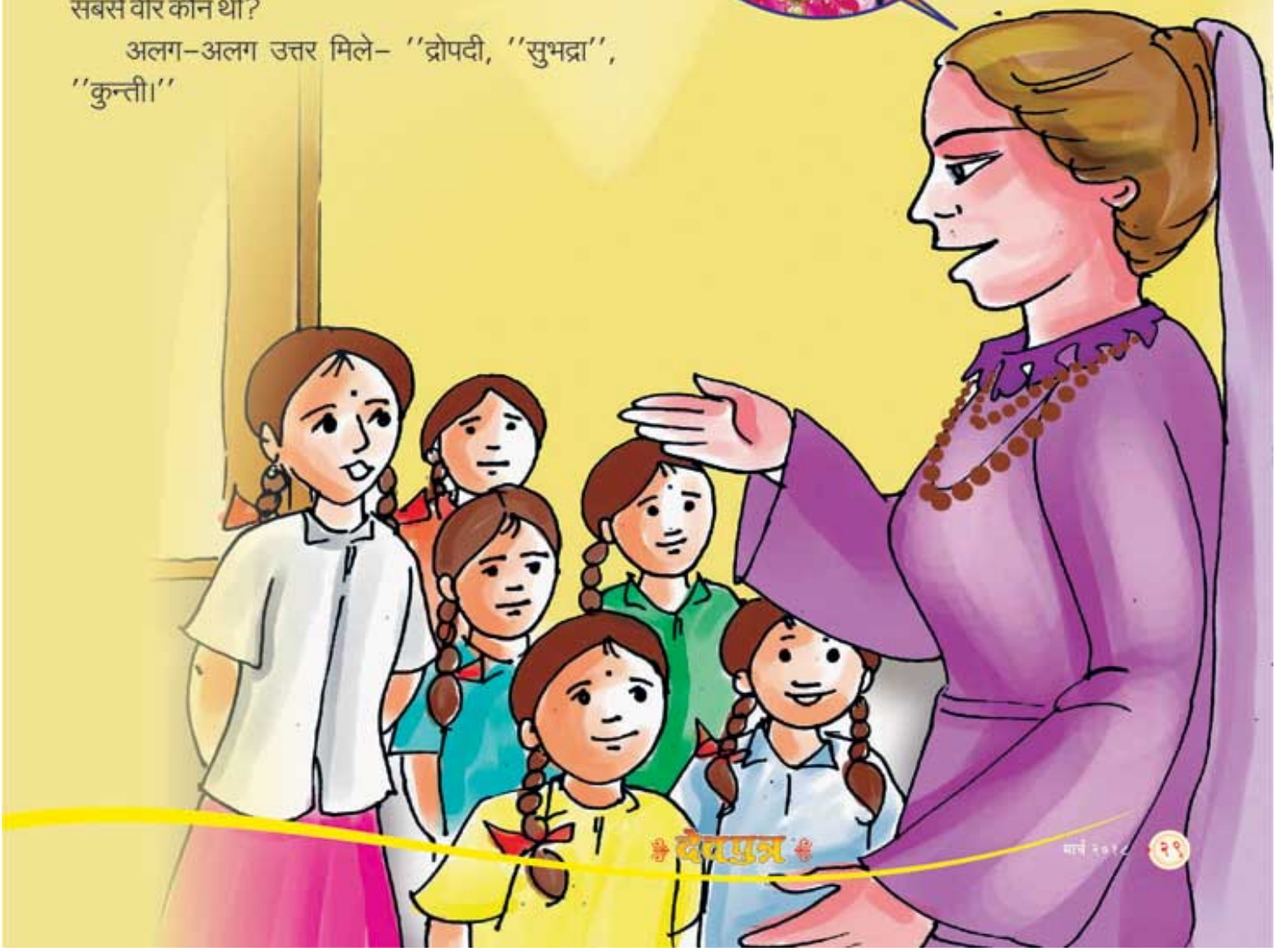

भारतीयता का गौरव

राष्ट्र के प्रति गौरव भाव लिए उनके अनेक प्रसंग प्राप्त होते हैं।

स्वतंत्र भारत के संविधान की मूल प्रति का जिन्होंने बाद में चित्रांकन किया वे नन्दलाल बसु उस समय छात्र थे। एक बार वे निवेदिता से भेंट करने अपने मित्र के साथ उनके घर पहुंचे। निवेदिता दूसरे कक्ष में थीं। दोनों मित्र सोफे पर बैठ गए।

निवेदिता ने आते ही कहा ''आप लोग नीचे बैठें।''

स्वाभाविक था इन भारतीय युवकों को यह अपमान जनक लगा। निवेदिता के मुख पर अपमान नहीं श्रद्धा के भाव थे, वे कह रहीं थीं– ''आप लोग बुद्ध के देश के निवासी हैं जैसे बुद्ध बैठते हैं वैसे बैठो मुझे अच्छा लगता है।''

यदुनाथ सरकार से इतिहास संबधित वार्तालाप चल रहा था। बातों के दौरान सरकार ने एक अंग्रेज भक्त इतिहासकार का उल्लेख करना चाहा। निवेदिता अनावश्यक अंग्रेज भक्तों की चर्चा से भी चिढ़ती थीं। यदुनाथ सरकार को बेबाक रोकते हुए बोली– ''उसकी बात न करें। वह एक अंग्रेज प्रशंसक है।''

बर्बर अंग्रेज सभ्य भारतीय

निवेदिता और जगदीशचन्द्र बसु का परिवार बुद्ध गया की यात्रा करके लौट रहे थे। यहाँ से दोनों की रेलगाड़ी अलग-अलग थीं। बसु की गाड़ी पहले आ गई। कहीं स्थान न था भीड़ होने से वे प्रथम श्रेणी के डिब्बे में चढ़ने का प्रयास करने लगे। अन्दर बैठे दो अंग्रेजों ने इन्हें भारतीय समझकर चढ़ने से रोकना चाहा। बसु के साथी स्टेशन मास्टर से शिकायत करके लौटते तब तक तो निवेदिता उन अंग्रेजों को जोरदार फटकार लगा कर पानी पानी कर चुकी थीं।

उधर बसु रेलगाड़ी में चढ़े। इधर निवेदिता की गाड़ी आ लगी। उसमें प्रथम श्रेणी के दो डिब्बे थे। एक में सवार थी कोई अंग्रेज महिला दूसरे में एक भारतीय पुरुष। साथियों ने निवेदिता को अंग्रेज महिला के डिब्बे में चढ़ाना उचित समझा लेकिन निवेदिता भारतीय पुरुष वाले डिब्बे में चढ़ गई। भारतीय सज्जन ने तत्काल अपनी हुक्का आदि समान हटाया और उनके लिए स्थान बना दिया।

निवेदिता के उद्‌गार फूट पड़े ''देखा, बर्बर अंग्रेज और सभ्य भारतीय में कितना अन्तर है।''

प्रत्येक क्षेत्र में भारतीयता

निवेदिता का सुदृढ़ मत था कि भारत वर्ष का जागरण केवल राजनैतिक अथवा धार्मिक क्षेत्र में नहीं होगा बल्कि विज्ञान, शिक्षा, साहित्य, इतिहास, शिल्प आदि सभी क्षेत्रों में होगा।

राष्ट्रीय जागरण में वे शिल्प जागरण को बहुत महत्वपूर्ण मानती थीं। इस हेतु उन्होंने आन्दोलनपूर्वक हैवेल, अवनीन्द्रनाथ, और कुमार स्वामी जैसे शिल्पज्ञों (आर्किटेक्टस्) को जोड़ा उन्हें दृष्टि और दिशा दी। स्वयं इस विषयक लेख लिखे। वे शिल्पकला के पुनरुत्थान से भारत को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में जाग्रत होने का स्वप्न देखती थीं।

अजंता, एलोरा का शिल्प और चित्रांकन उन्हें मूल भारतीय शिल्प की अभिव्यक्ति लगता था।

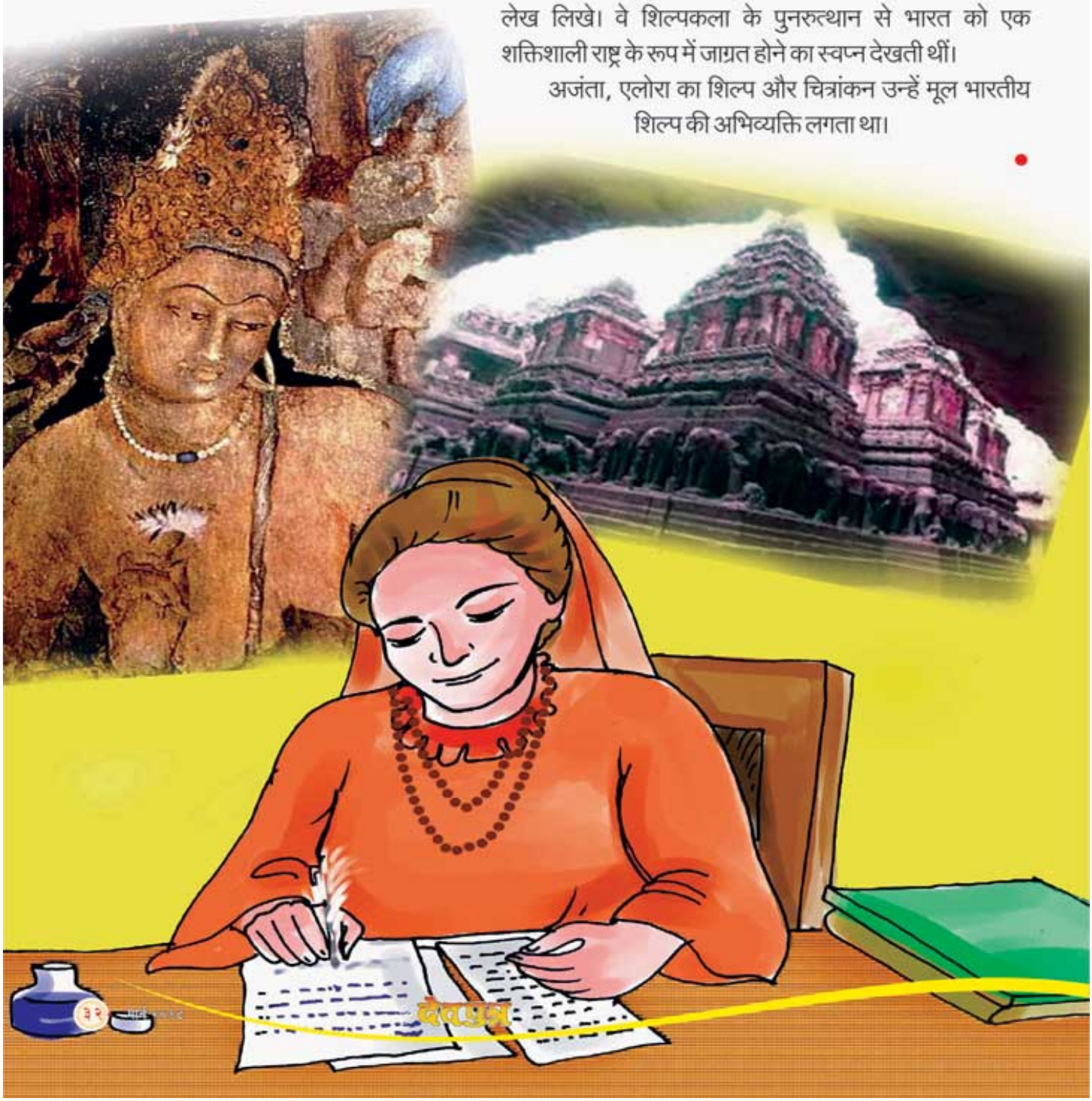

नारी का स्थान

वर्ष १९०५ कोलकाता का कांग्रेस अधिवेशन। सुप्रसिद्ध तमिल कवि श्री सुब्रह्मण्य भारती का सम्मेलनार्थ आगमन हुआ। कोलकाता में उनकी भेंट हुई निवेदिता से। यद्यपि निवेदिता की रुचि राजनैतिक न थी पर हर वह व्यक्ति जो राष्ट्र का चिंतन करता है उनका आत्मीय था। ''आप अपनी पत्नी को साथ नहीं लाए?'' निवेदिता ने पूछा।

सुब्रह्मण्य बोले ''हमारे समाज में पत्नी को सार्वजनिक समारोहों में ले जाने की रीति नहीं है।''

निवेदिता धधक उठी ''भारी दुःख के साथ में एक और भारतीय को देख रही हूं जो पत्नी को खरीदा हुआ गुलाम समझता है। तुम्हारी शिक्षा का क्या महत्व यदि तुम नारी जाति का अपने स्तर तक उन्नति न कर सको? अपने आधे हिस्से को पराधीन रख कर भी किसी देश की आधी जाति कैसे स्वाधीन हो सकती है?'' फिर कुछ शांत होकर कहने लगी'' आज से तुम अपनी पत्नी को अपने से अलग कुछ मत समझो।''

भारती अभिभूत हो उठे। मद्रास लौटते समय निवेदिता के पारस सम्पर्क से वे अब पूर्ण जागरूक, सम्पूर्ण राष्ट्रीय, रूपान्तरित व्यक्ति थे जो जाति अथवा नरनारी जैसे सारे भेद भुलाकर राष्ट्र देवता को समर्पित हुए।

उनका पहला ग्रंथ निवेदिता को ही समर्पित था और दूसरा भी। बाद में वे एक प्रखर राष्ट्रीय कवि के रूप में भारत के गौरव बने।

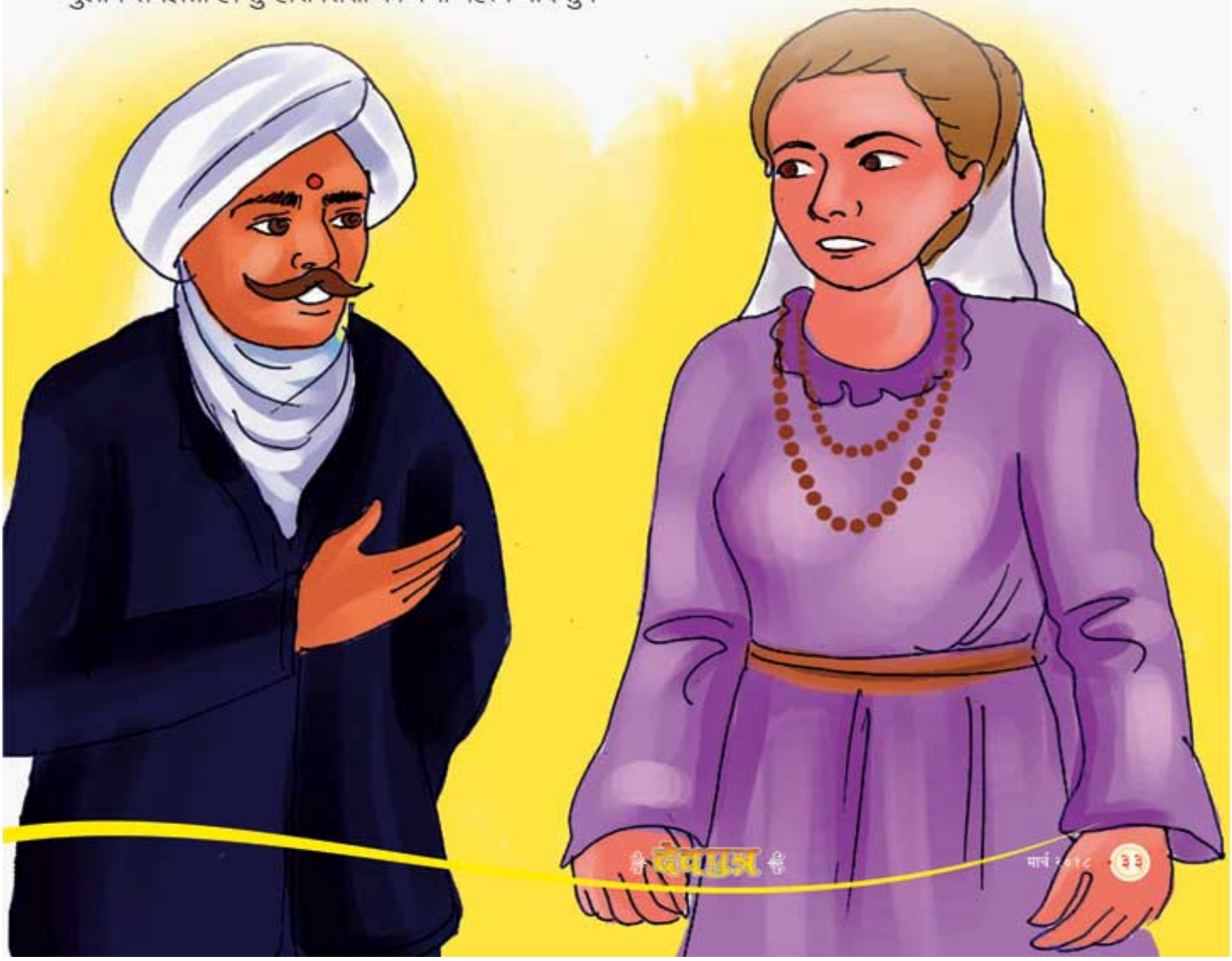

विज्ञान की सहायता

पराधीन राष्ट्र की प्रतिभाओं को अनेक कठिनाइयों का सामना करना ही होता है। भारतीय दृष्टि से वैज्ञानिक अनुसंधानों में अग्रणी आचार्य जगदीशचन्द्र बसु को १९०१ से रायल सोसायटी से अनुसंधान विषयक अर्थिक सहायता बंद हो चुकी थी। निवेदिता ने इस विलक्षण विज्ञानी का सर्वप्रकार संभव सहयोग किया। वे उन्हे १८९० से जानती थीं कोलकाता आने पर यह परिचय पारिवारिक हो चला था। १९०१ से १९०७ के बीच बसु तीन बृहद् ग्रंथों का संपादन और भाषा संस्कार निवेदिता ने स्वयं किया था।

बसु निवेदिता से १०वर्ष बड़े थे फिर भी अनेक पत्रों में उन्हें निवेदिता से सम्बोधन मिलता 'शिशु'। एक महान वैज्ञानिक की मातृवत् सहायिका थीं निवेदिता।

'बसु विज्ञान मंदिर' प्रवेश द्वार के पास दीवार पर खुदा निवेदिता का चित्र आज भी स्मृति दिलाता है इस अनूठे सम्बन्ध की। जिसका आधार थी भारत–भक्ति।

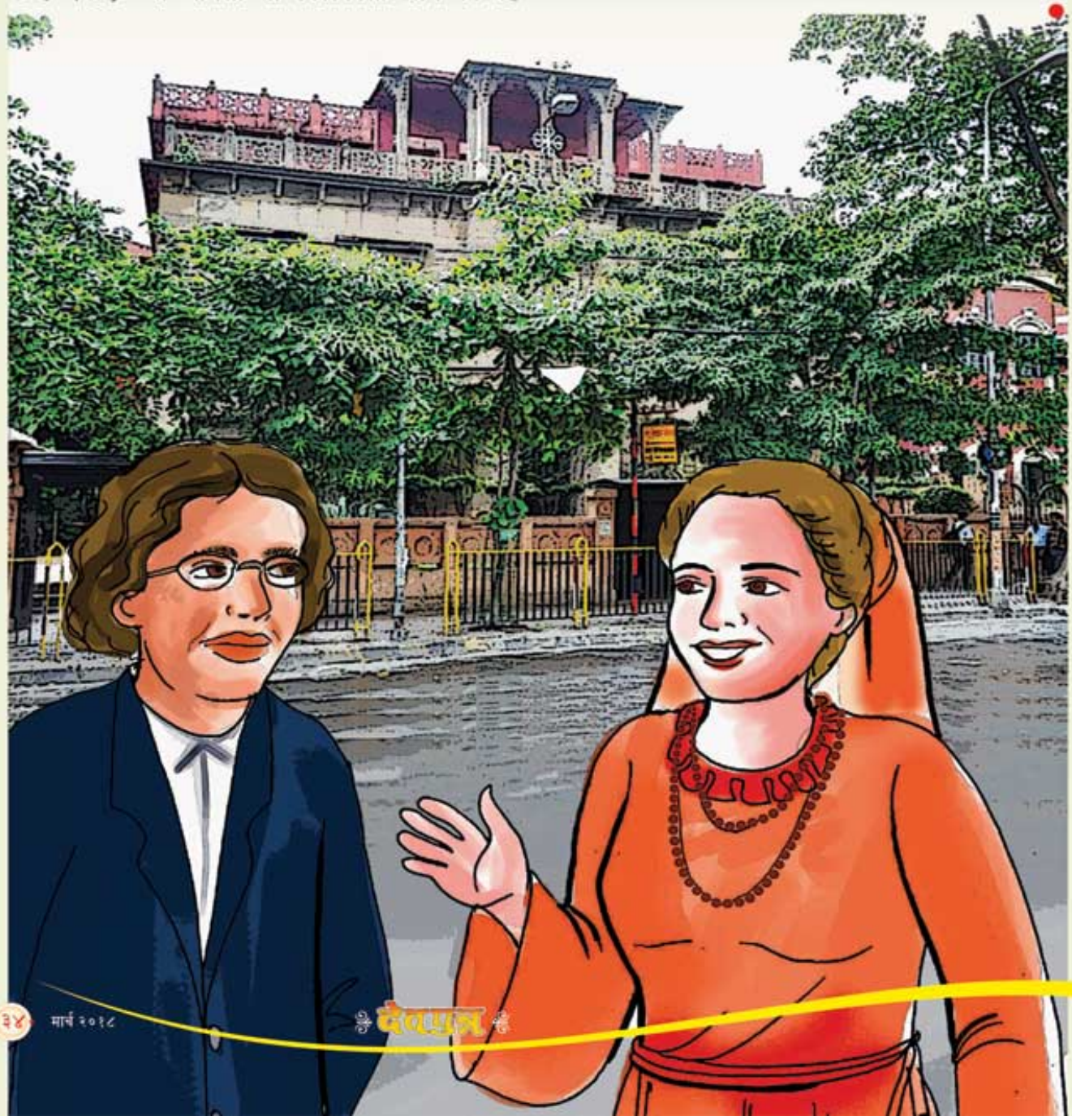

संस्कारों से भारतीय

'प्रवासी' उस समय की सुप्रसिद्ध बांग्ला पत्रिका थी। संपादक थे श्री रामानन्द चट्टोपाध्याय। निवेदिता से उनकी मित्रता तो थी ही वे इनके द्वारा संपादित 'माडर्न रिव्यू' की नियमित लेखिका भी थीं।

एक बार रामानन्द बाबू अस्वस्थ थे। निवेदिता उन्हें मिलने उनके घर पहुँची। निवेदिता ने लम्बा सा अंग्रेजी परिधान पहना था वस्त्रों की ही मेल के सफेद जूते भी उनके पैरों में थे। पाश्चात्य प्रदेश प्रायः बहुत ठण्डे होते हैं अतः वहाँ कहीं भी जाने पर जूते उतारने की पद्धति नहीं है पर भारत की प्रकृति तो माँ जैसी है, अपनी संतानों के लिए ठण्डा–गर्म रूप बदलने वाली।

निवेदिता ने कमरे के बाहर ही जूते उतारे फिर कक्ष में प्रवेश किया। तन भले विदेशी रहा हो मन तो पूर्ण स्वदेशी संस्कारों में रंगा हुआ था।

निवेदिता को ऐसा करते देख सभी चकित थे तभी उनके अनपूछे प्रश्न के उत्तर में निवेदिता ने मुस्करा कर कहा ''मैं जानती हूँ जूते बाहर खोलना चाहिए।''

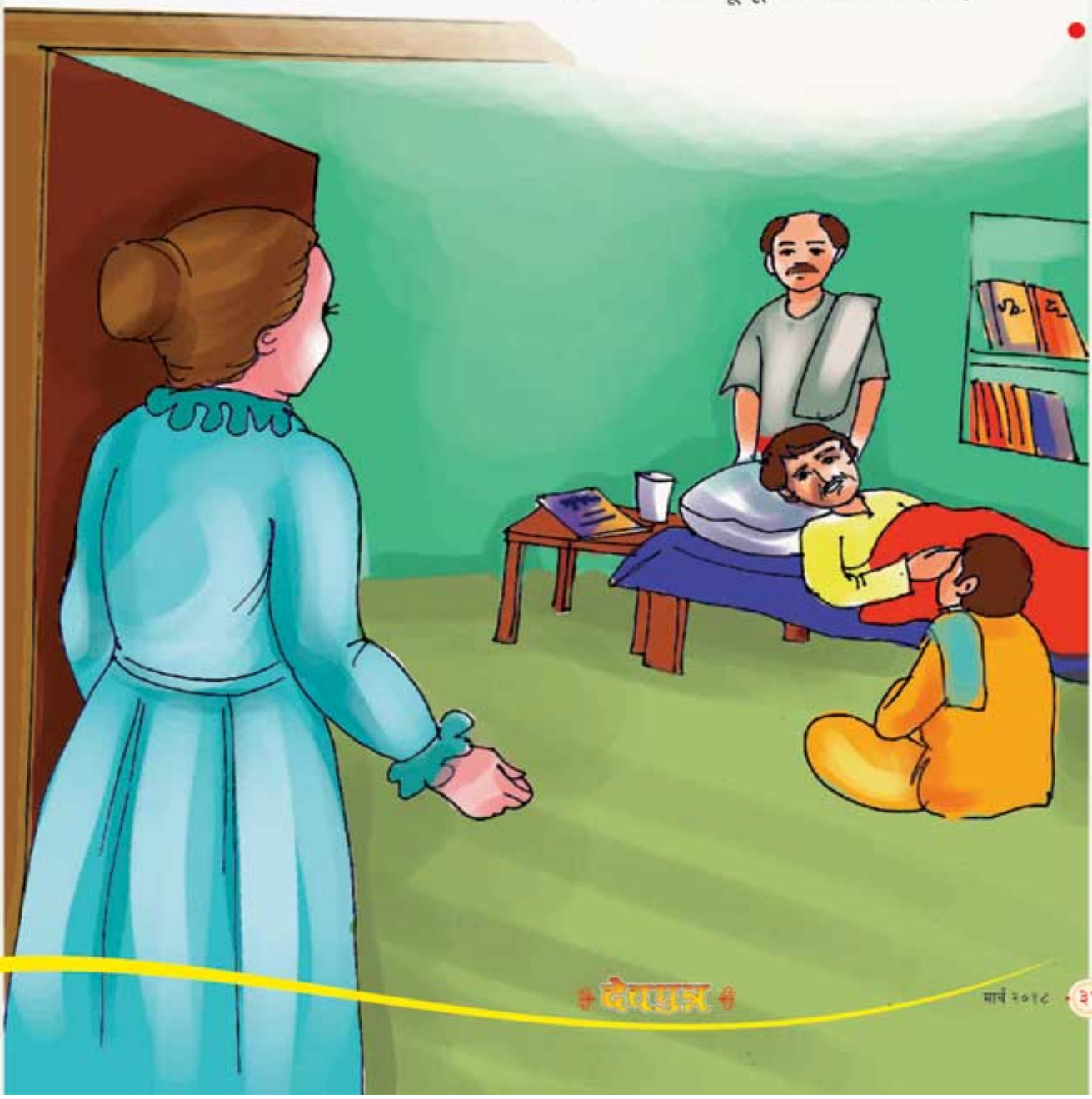

इतिहास से तादात्म्य

निवेदिता अध्यापन कार्य भी सेवा जितनी तल्लीनता से करती थी। इतिहास पढ़ाते समय तो वे ऐसी खो जाती थीं मानो स्वयं उस कालखण्ड की घटनाओं की प्रत्यक्षदर्शिनी हो। इतिहास जैसा नीरस विषय भी उनकी भावपूर्ण वर्णनशैली से इतना प्रभावी बन जाता था कि छात्राएं भी उसमें जीवंत अनुभव करती दिखाई देती।

एक दिन अपने ऐतिहासिक भ्रमण के संस्मरणों की श्रंखला में प्रसंग था चित्तौड़गढ़ का। वे महारानी पद्मिनी के जौहर के भाव दर्शन का अनुभव बता रही थीं।

''मैंने पहाड़ पर चढ़कर पत्थर पर घुटने टेक कर याद किया। प्रज्ज्वलित अग्निकुण्ड के सामने महारानी पद्मिनी देवी हाथ जोड़े खड़ी हैं। मैंने आँखें मूंदे पद्मिनी देवी के अंतिम चिंतन को अपने मन के अंदर लाने को प्रयत्न किया।''

बोलते–बोलते वे इतनी तन्मय और भावुक हो गईं मानों स्वयं उस युग में धधकते अग्निकुण्ड में जौहर के लिए खड़ी पद्मिनी से जा मिली हों।

उन्होंने इतिहास पढ़ना नहीं जीना सीखा था अपने गुरु स्वामी विवेकानन्द के साथ देशाटन करते हुए।

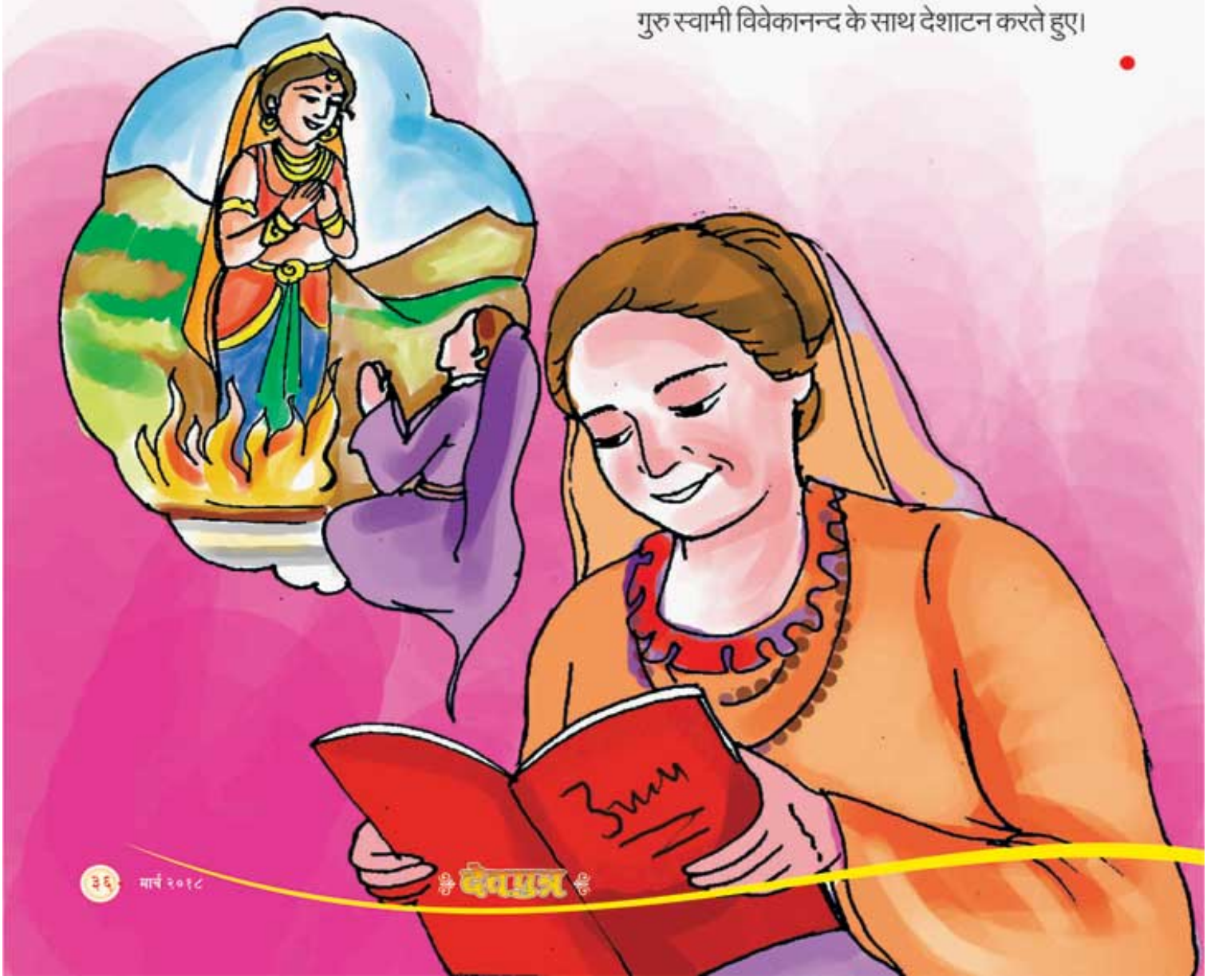

अपनी भाषा अपनाओ

निवेदिता को बांग्ला भाषा से अत्यंत लगाव था वे जब भी अवसर मिलता बांग्ला सीखने का अवसर नहीं चूकतीं। इसके लिए वे अपनी छात्राओं को भी अपना शिक्षक मानने में संकोच न करतीं। वे भाषा में विदेशी भाषा (अंग्रेजी) शब्दों के प्रयोग को अनुचित मानती थीं, जब कि वे स्वयं तो मूलतः अंग्रेजीभाषी ही थीं।

एक दिन एक बालिका अपनी पाटी पर लकीर खींचते हुए बोली ''लाईन खींच रही हूँ।''

निवेदिता के कान खड़े हो गए। वे बोली '' लाईन तो अंग्रेजी शब्द है तुम अपनी मातृभाषा (बांग्ला) में कहो।'' लेकिन बालिका को तत्काल कोई पर्याय शब्द सूझा ही नहीं। निवेदिता का मुँह दुःख और क्रोध से लाल हो उठा उन्हें खेद था 'बच्चे अपनी भाषा भूल रहे हैं।'

तभी एक अन्य बालिका बोल पड़ी ''लाईन का दूसरा शब्द है 'रेखा'।''

''रेखा, रेखा, रेखा'' निवेदिता एकदम प्रसन्न होकर ऐसे दुहराने लगी मानों उन्हें खोई हुई बहुमूल्य वस्तु मिल गयी हो।

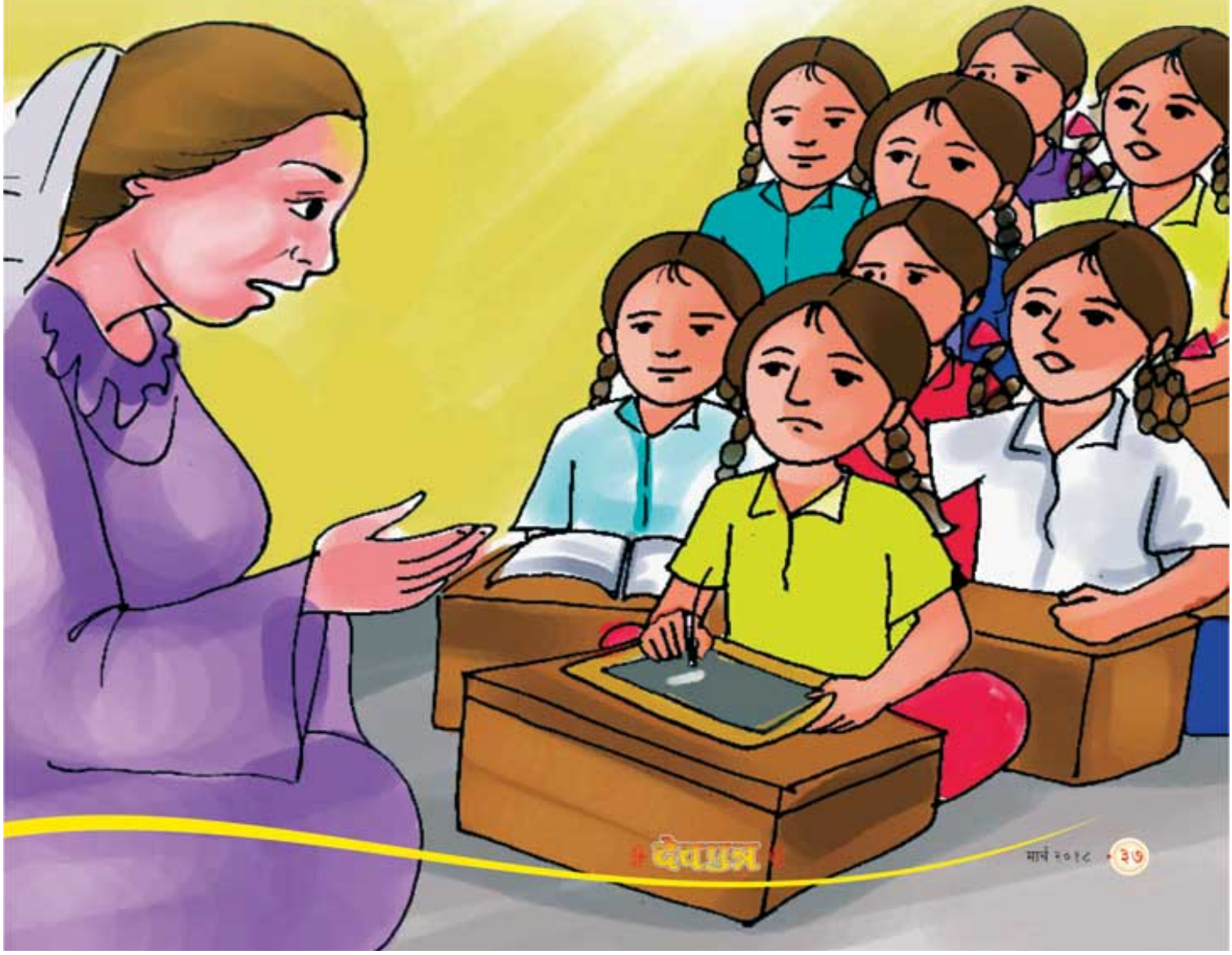

भारत का राष्ट्रीय चिन्ह

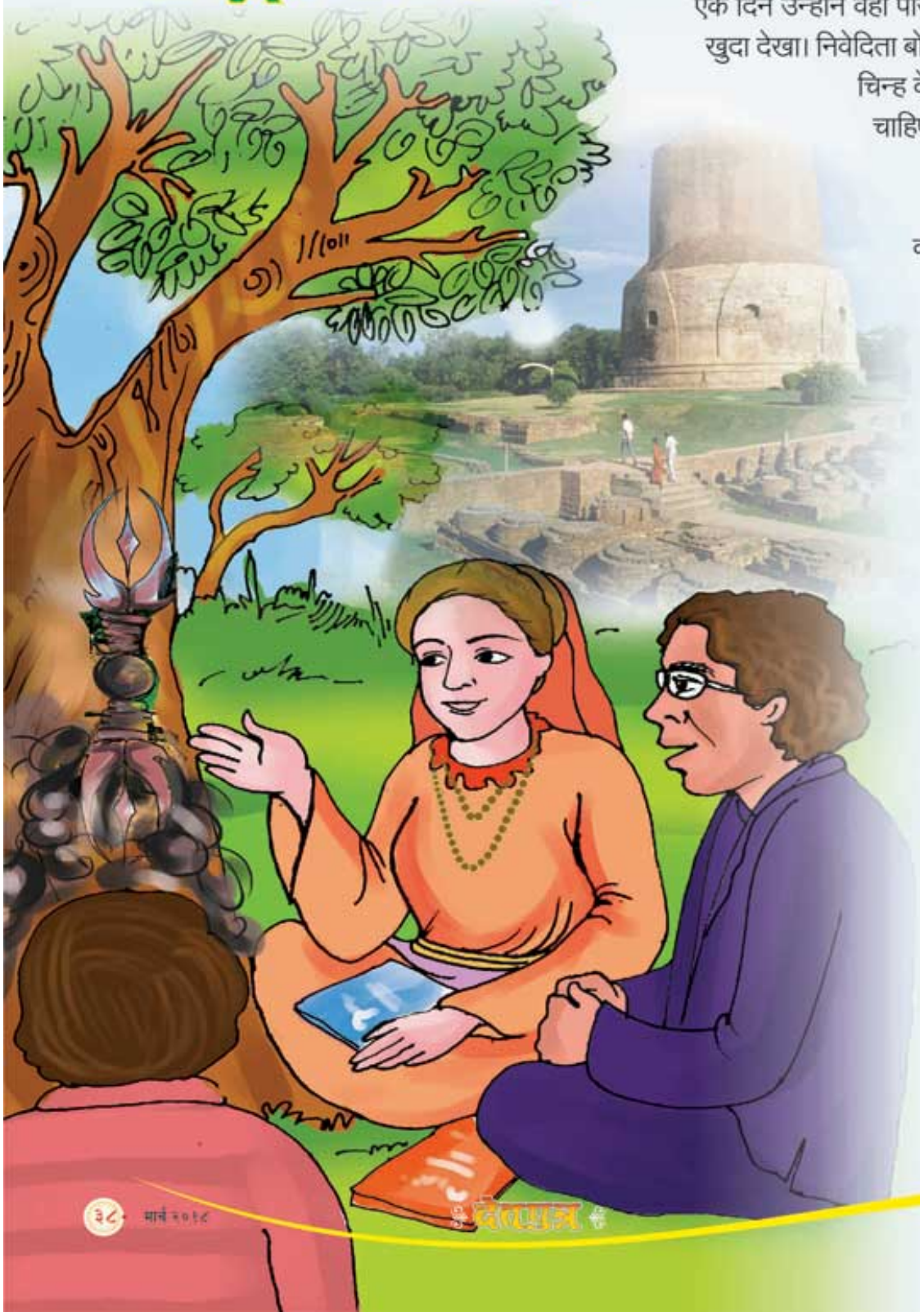

निवेदिता के साथ रवीन्द्रनाथ, क्रिस्टनी, जगदीशचन्द्र बसु उनकी पत्नी अबला बसु सब मिलकर बोध गया घूमने गए थे। निवेदिता प्रतिदिन बोधिवृक्ष के नीचे बैठकर ध्यान करतीं।

एक दिन उन्होंने वहीं पास में 'वज्र' का एक चिन्ह खुदा देखा। निवेदिता बोली '' भारतवर्ष के राष्ट्रीय चिन्ह के रूप में इसे ग्रहण करना चाहिए।''

''क्यों?''

''इसका अर्थ है जब कोई सारी मानवजाति के कल्याण के लिए सर्वस्व त्याग करते हैं तब वे इस वज्र के समान ही शक्तिशाली होकर देवता का निर्दिष्ट कार्य करते हैं। भारत का मूल आदर्श है 'त्याग'। इसलिए 'वज्र' भारत का राष्ट्रीय चिन्ह होना चाहिए।''

स्मरणीय है निवेदिता द्वारा बनाए गए भारत वर्ष के राष्ट्रीय ध्वज पर यही वज्र अंकित था।

आचार्य जगदीशचन्द्र बसु के 'बसु विज्ञान मंदिर' के शिखर पर भी निवेदिता द्वारा प्रस्तावित 'वज्र चिन्ह' शोभायमान है।

समकालीन विशिष्ट जनों से सम्पर्क

स्वामी विवेकानंद और माँ सारदा देवी की तो वे अनन्य स्नेहभाजन थी हीं। उस समय की विविध क्षेत्रों की जानी मानी प्रख्यात प्रतिभाओं से उनका प्रत्यक्ष सम्पर्क था। श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर, श्री जगदीशचन्द्र बसु, श्री सुब्रह्मण्य भारती, योगीराज अरविन्द, क्षितिमोहन सेन और विपिनचन्द्र पाल आदि अनेक स्वनाम धन्य ऐसी ही विभूतियाँ हैं।

अनेक विशिष्टजनों के अतिरिक्त उन सामान्य भारतीयों की संख्या अगणित है जिनके मन प्राण और संस्कारों में निवेदिता ने राष्ट्रीयता का रंग चढ़ाया।

महाज्योति में विलीन

१३ अक्टूबर १९११। निरंतर प्रवास और परिश्रम से निवेदिता की देह रोगजर्जर थी। वे तब भी निष्क्रिय न थी पर शरीर की वेदना चरम पर थी।

भारत वर्ष के पूर्वोत्तर का पर्वतीय प्रान्त असम। निवेदिता उस दिन दार्जिलिंग में थीं। पर्वत शिखरों पर श्यामल मेघावली मानों प्रभात में ही इस महान आत्मा के महाप्रयाण का पंथ सींच रही थीं। अचानक मेघमण्डली के मध्य सूर्यदेव की प्रखर रश्मियों से निवेदिता का कक्ष पूर्ण अलोकित हो उठा।

वे बुदबुदाती–सी कहने लगी ''मेरे जीवन की यह भटकती नाव अब डूबना ही चाहती है लेकिन मुझे उज्ज्वल भविष्य की राश्मियाँ दिखाई दे रहीं हैं।''

वे अपने महाप्रयाण के पूर्व सब कुछ मठ को दे चुकीं थीं। अन्तिम प्रयाण के समय वे अर्द्धचेतना में मंद मंद उच्चार कर रही थीं।

असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्यातिर्गमय, मृत्योर्मा अमृतंगमय।

भारतीय संस्कृति को परतंत्रता के क्षार समुद्र में सहारा देखकर उबारने वाली सशक्त महानौका अब डूब रही थी लेकिन असंख्य भारतीय युवक युवतियों की बाहुओं में इस सागर को तैर कर पार करने की प्रगाढ़ प्रेरणा और अदम्य साहस भरकर।

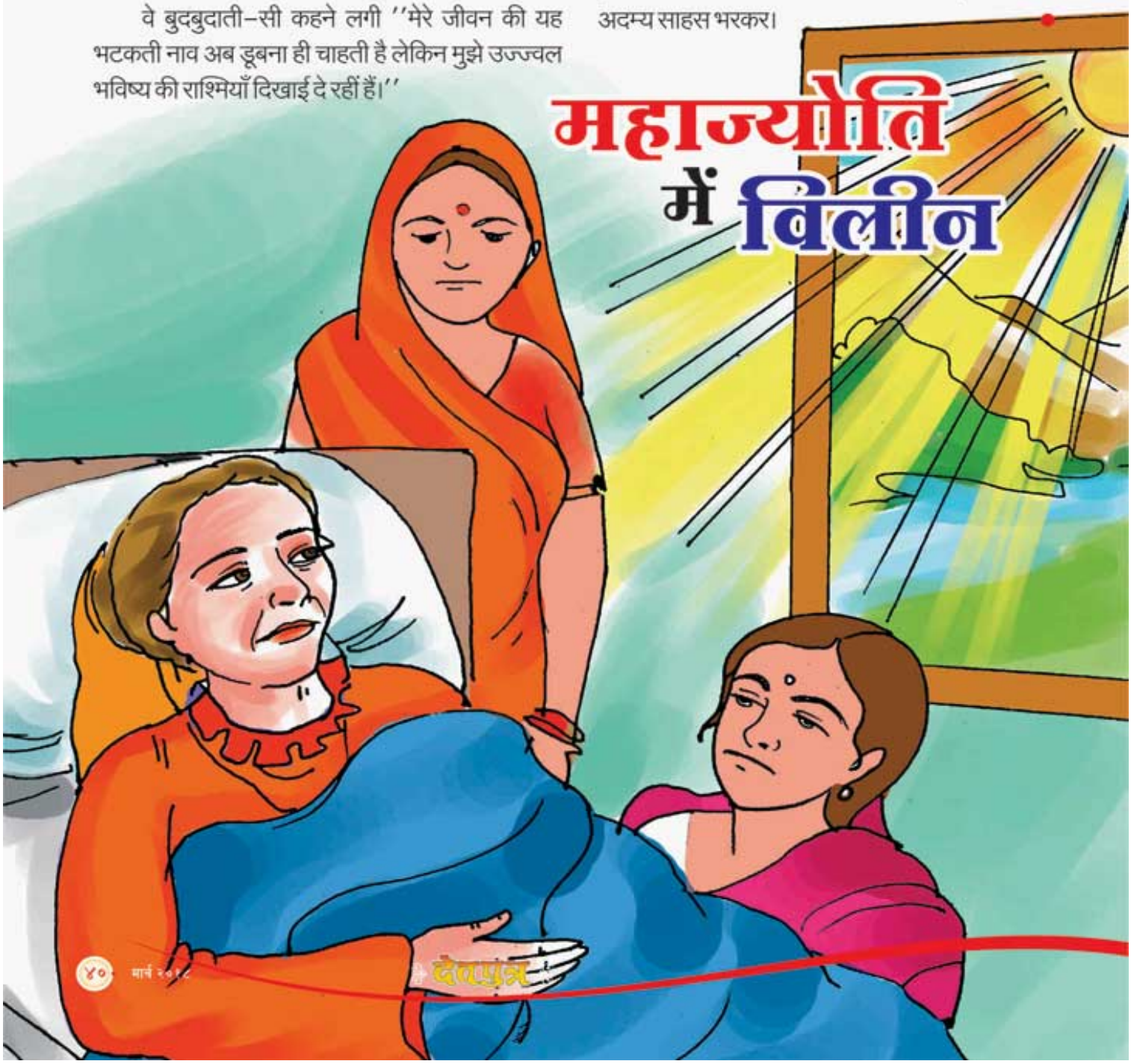

उनकी समाधि चिरकाल तक भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयतामय जीवन जीने का आदर्श स्मरण दिलाती रहेगी।

आज भी जाग रही है निवेदिता अपने सूक्ष्म आध्यात्मिक रूप में अपने असंख्य भारतवासियों को निहारती, प्रतीक्षा करती कि कब बनेगा उनका भारतवर्ष 'परमवैभवशाली'।

उनकी समाधि पर लिखा है 'जिसने अपना सर्वस्व भारत पर न्यौछावर किया उस निवेदिता ने यहाँ अपनी देह रखी।'

श्री सारदा माँ ने उन्हे पुकारा था 'मेरी बेटी'। स्वामी विवेकानंद ने नाम दिया 'निवेदिता'। महर्षि अरविन्द ने विशेषण जोड़ा तो वे हुई 'भगिनी निवेदिता'। रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने सम्बोधन दिया 'लोकमाता'। किन्हीं भारतजनों ने कहा 'विवेकानंद की मानस कन्या' किसे ने कहा 'भारत–दुहिता'। ऐसी थी भारत पुत्री निवेदिता।

इतने कम पृष्ठों में सेवा, ममता और भारतीयता की इस विराट जीवंत प्रतिमा का चरित्र चित्रण असंभव ही है। अनेक प्रसंग छूटे जो कम प्रेरक नहीं हैं। अपने बाल पाठकों के लिए। यह तो झलक भर है उस महान आत्मा की।

भारत पुत्री निवेदिता

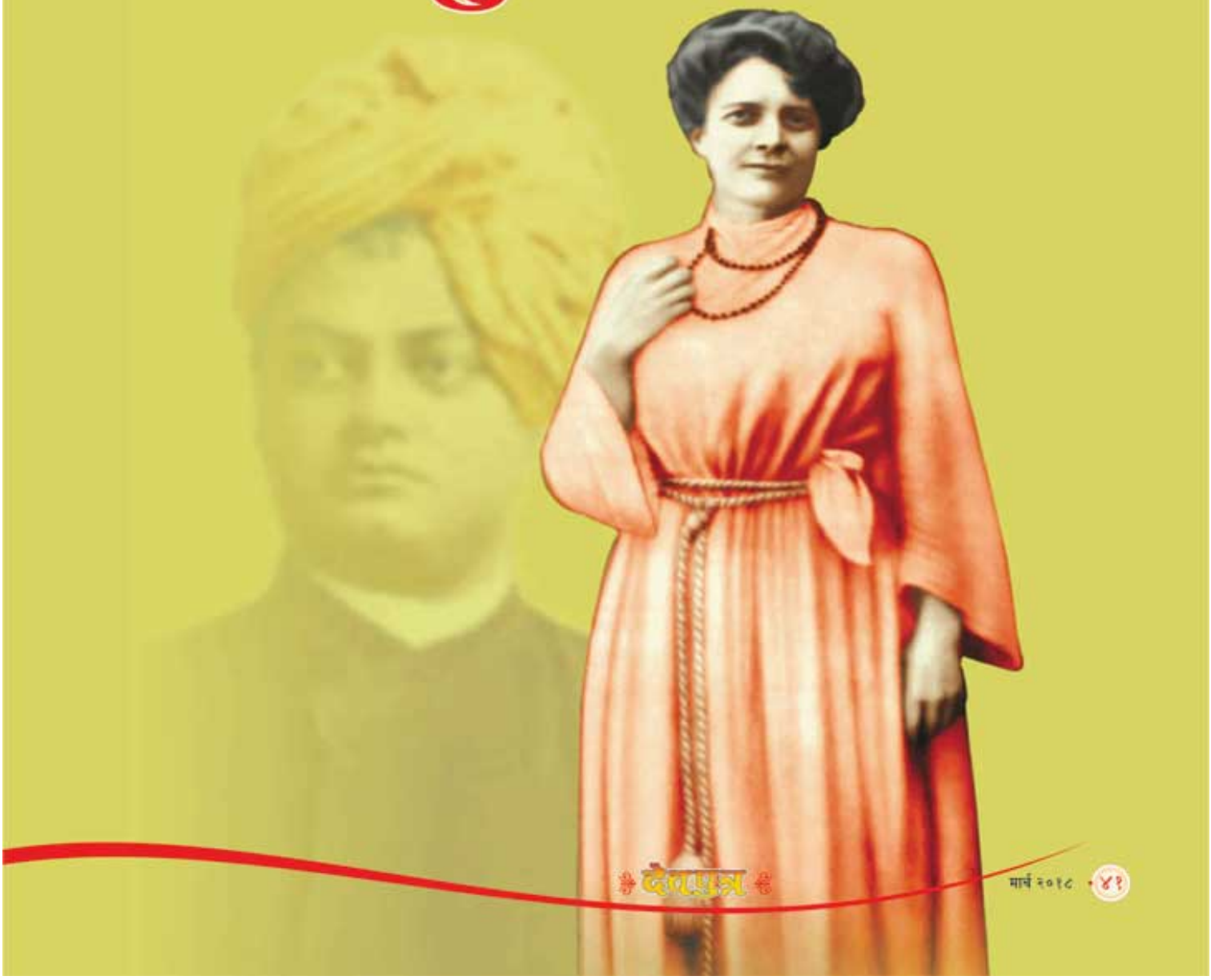

भगिनी निवेदिता
एक अद्भुत जीवन यात्रा

२८ अक्टूबर, १८६७ -	अवतरण।
१८८४-	सत्रह वर्ष की आयु में केसविक (Keswick) में अध्यापन कार्य का श्री गणेश।
१८८६ -	रेक्सहम (wrexham) के कोयला खदान क्षेत्र में अध्यापन।
१८८९ -	चेस्टर में आगमन। श्रीमती डी. लिवू के साथ अभिनव शिक्षण प्रयोग।
नवम्बर, १८९५ -	स्वामी विवेकानंद का लंदन में आगमन।
१८८६ -	लेडी इसाबेल मार्गेसन के घर पर स्वामी जी से प्रथम भेंट।
१८९८ -	जनवरी के प्रथम सप्ताह में मॉम्बासा जहाज सेभारत के लिए प्रस्थान।
२४ जनवरी, १८९८ -	भारत भूमि पर पदार्पण (चेन्नई में)।
२८ जनवरी, १८९८-	कलकत्ता के स्टार थियेटर में पहला सार्वजानिक भाषण विषय 'भारतीय आध्यात्मिक विचार का इंग्लैण्ड पर प्रभाव' सभा की अध्यक्षता, स्वामी विवेकानंद ने की।
१७ मार्च, १८९८ -	१०/२ बोसपाड़ा लेन में माँ शारदा से भेंट और उनके द्वारा कुमारी नॉबल के साथ भोजन ग्रहण कर उसे सामाजिक स्वीकृति प्रदान करना।
२५ मार्च, १८९८-	हिन्दू धर्म में दीक्षा। मार्गरिट एलिजाबेथ नॉबल से निवेदिता नामकरण।
११ मई, १८९८ -	स्वामी के साथ उत्तर भारत दर्शन के लिए कलकत्ता से प्रस्थान।
११ जून, १८९८ -	अल्मोड़ा से कश्मीर यात्रा पर।
२४ जुलाई, १८९८ -	स्वामी द्वारा प्रथम बार भगिनी से उनके कार्य व उनमें अगाध विश्वास पर खुलकर बातचीत।
१६ अक्टूबर, १८९८ -	बोसपाड़ा लेन में अलग आवास की व्यवस्था।
२९ जुलाई, १८९८ -	अमरनाथ की यात्रा के लिए स्वामी जी के साथ प्रस्थान।
१३ नवम्बर, १८९८ -	मॉ शारदा द्वारा भगिनी की कन्या पाठशाला को शुभारम्भ आशीर्वाद।
१३ जनवरी, १८९९ -	अलबर्ट हॉल (कलकत्ता) में 'काली' पर व्याख्यान।
अप्रैल, १८९९-	प्लेग राहत में जी जान से जुटना।
२० जून, १८९९ -	स्वामी जी के साथ पश्चिम प्रवास पर।
नवम्बर, १८९९ -	'काली दा मदर' पुस्तक का लेखन कार्य सम्पन्न।
०१ दिसम्बर, १९०१ -	अवतरण कलकत्ता कांग्रेस के अवसर पर मोहनदास करमचंद गांधी (महात्मा गांधी) से भेंट।
०२ जुलाई, १९०२	स्वामी जी से अन्तिम भेंट। भोजनोपरान्त स्वामी जी द्वारा भगिनी के हाथ तौलिये से पोंछना।
०४ जुलाई, १९०२ -	स्वामी की महासमाधि
१८ जुलाई, १९०२ -	राष्ट्रीय राजनीति में भाग लेने के मुद्दे पर रामकृष्ण मिशन से सम्बन्ध- विच्छेद।
१९ जुलाई, १९०२ -	पश्चिम भारत की व्याख्यान यात्रा के लिए प्रस्थान।

दिसम्बर, १९०२ -	दक्षिण भारत की व्याख्यान यात्रा।
१९०४ -	भारतीय संस्कृति, राष्ट्रीयता व परम्परा की चेतना जागृत करने हेतु देशभर में व्यापक भ्रमण। 'द वेब ऑफ इण्डियन लाइफ' प्रकाशित।
१२ फरवरी, १९०५ -	लार्ड कर्जन के दीक्षान्त भाषण का सफल एवं प्रबल प्रतिवाद।
२५ दिसम्बर, १९०५ -	कांग्रेस के बनारस अधिवेशन में सम्मिलित।
जनवरी, १९०६ -	राजस्थान अगमन (चित्तौड़, अजमेर व आमेर)।
०६ जुलाई, १९०६ -	गोपल की माँ का निधन।
सितम्बर, १९०६ -	'ग्लिम्प्सेस ऑफ फेमाइन एण्ड फ्लड इन ईस्ट बंगाल' का लेखन।
१९०६ -	'द मास्टर एज आई सॉ हिम' एवं 'क्रेडल टेल्स ऑफ हिन्दुइज्म' का लेखन प्रारंभ।
१९०७ -	'क्रेडल टेल्स ऑफ हिन्दुइज्म' का प्रकाशन।
१९०८ -	रूसी चिंतक व क्रांतिकारी प्रिंस क्रॉपाटकिन से लंदन में भेंट।
०२ मार्च, १९१० -	'द मास्टर एज आई सॉ हिम' का पाँच वर्षों के परिश्रम के बाद लेखन कार्य सम्पन्न।
१८ जनवरी, १९११ -	भगिनी की परम स्नेही श्रीमती साराह बुल का निधन।
२५ जुलाई, १९११ -	स्वामी जी की माता श्री भुवनेश्वरी देवी का निधन।
१३ अक्टूबर, १९११ -	भगिनी का महाप्रयाण (दार्जिलिंग में)

(निवेदिता: एक समर्पित जीवन,
लेखक-उमेश कुमार चौरसिया से उध्दृत)

सरस्वती विद्यापीठ
(आवासीय विद्यालय)

AN ISO 9001:2008 Certified

पोस्ट बाक्स नं. 10, उतैली, सतना मो. 7024249850 फोन : (07672) 250073, 250870

विशेषताएँ

●माध्यमिक शिक्षा मणडल द्वारा आयोजित हाई स्कूल प्रमाण पत्र परीक्षा में 2005 से लगातार प्रदेश की विद्यालयश: प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त।●म.प्र. शासन से मान्यता प्राप्त (विद्या भारती से सम्बद्ध)●कक्षा 6 वीं से 12 वीं तक (विज्ञान, गणित, एवं वाणिज्य संकाय)●सीसी टी युक्त परिसर●सर्व सुविधायुक्त आवासीय छात्रावास ●अन्तर्राष्ट्रीय मानक का धावन पथ●विज्ञान मंडप (म.प्र. के विद्यालयों में एकमात्र)●कम्प्यूटर शिक्षा की व्यवस्था●अंग्रेजी संभाषण की सुव्यवस्था ●प्रतियोगी परीक्षाओं की सुविधा - राज्य स्तरीय साईंस ऑम्पियाड, राष्ट्रीय साईंस ओलम्पियाड, राष्ट्रीय गणित ओलम्पियाड, राष्ट्रीय अंग्रेजी ओलम्पियाड, एन.टी.एस.ई., एन.एस.टी.एस.ई., एन.डी.ए., किशोर वैज्ञानिक प्रोत्साहन योजना(के.व्ही.पी.वाई.), पी.पी.टी., आई.आई.टी.जे.ई.ई. मेन्स, ए.आई.पी.एम.टी., सी.ए., सी.पी.टी. (कामर्स), आई.सी.ए.आर. (सभी समूह), आर.आई.एम.सी. (7वीं) ●भव्य पुस्तकालय/वाचनालय●सरस्वती शिक्षा परिषद द्वारा प्रदेश के खेल मॉडल के रूप में विकसित●अनुभवी एवं योग्य शिक्षकों द्वारा अध्यापन●एल.सी.डी. प्रोजेक्टर द्वारा शिक्षण की सुविधा।●2006,2008, एवं 2010 में मध्यप्रदेश की विद्यालयश: प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान।●2009,2010, एवं 2011 में माननीय मुख्यमंत्री द्वारा सम्मान एवं प्रशंसा पत्र प्राप्त।●2014 में प्रदेश की प्रावीण्य सूची में दसवीं में छठवाँ स्थान एवं बारहवीं में तीसरा स्थान।●अत्याधुनिक स्मार्ट क्लासेस कम्प्यूटर द्वारा शिक्षण की सुविधा।●भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान एवं आई.पी. की सुव्यवस्थित प्रयोगशालाएँ।●विषय विशेषज्ञ एवं प्रतिष्ठित कोचिंग सेन्टर से मार्गदर्शन दिलाना।● कैरियर काउन्सिलिंग की समुचित व्यवस्था।

श्रद्धांजलियाँ...

भगिनी निवेदिता के महाप्रयाण से पूरा भारत शोकमग्न हो गया। सामाजिक जाग्रति हेतु भगिनी निवेदिता ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में यात्रा की थी। स्वतंत्रता संग्राम में भी वे अग्रणी थीं। इस कारण उनका लोकसंग्रह तथा परिचय बहुत व्यापक था। उनके निधन से मानो अपना ही आत्मीय खो दिया था। उनके शोक सन्देश के माध्यम से हमें उनके बहुआयामी व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं।

हम जनसेवा हेतु अपना समय, धन तथा प्राण भी देते हैं परन्तु अपना सर्वस्व यानि अपना अन्तःकरण नहीं देते। हममें और भगिनी निवेदिता में यही फर्क था। भारतवासी कोई भी जाति, धर्म तथा सम्प्रदाय का हो भगिनी निवेदिता उनको अपनी लगती थीं क्योंकि वे हरेक से बड़ी आत्मीयता से मिलती थीं। हरेक को आदरभाव से देखती थीं। भगिनी निवेदिता 'लोकमाता' थीं।

- रवींद्रनाथ ठाकुर

किताब से प्राप्त ज्ञान यानी ज्ञान नहीं अपितु अपनें अन्तर्मन में उतरा हुआ ज्ञान ही ज्ञान है। भगिनी निवेदिता को इस प्रकार का ज्ञान प्राप्त हुआ था। उसका कोई सानी नहीं है। भारतीय जीवन परिवार संस्था में जो उच्च तत्त्व थे उसे उन्होंने अपनी लेखनी से लिख छोड़ा है। उन्होंने इसके माध्यम से समपूर्ण भारत तथा पूरे विश्व की सेवा की है।

- श्री रामानन्द चटर्जी

भारतवर्ष में पूर्व में भी अनेक महाविचारों को आत्मसात किया था भविष्य में भी कर सकते हैं। परन्तु भगिनी निवेदिता ने सिर्फ आत्मसात ही नहीं किया अपितु उसके गुणदोषों सहित स्वीकार किया और अन्तिम सांस तक भारत की सेवा की।

- श्री गोपालकृष्ण गोखले

भगिनी निवेदिता अन्तर्बाह्य भारतीय थीं। उनका नागरिकत्व एक ब्राह्य घटना थी। उनकी आत्मा पूर्ण रूपेण भारतीय थी। ऐसा लगता है कि पुरातन काल के किसी ऋषिका ने पश्चिम में जन्म लेकर अपनी प्राप्त क्षमताओं की सहायता से अपनी कर्मभूमि व देवभूमि तथा अपने देशबाँधवों की सेवा की।

- श्री सुरेन्द्रनाथ बन्दोपाध्याय

सुप्त भारत में यदि नव चैतन्य दिख रहा हो तो वो सिर्फ भगिनी निवेदिता के कारण। उन्होंने भारत में चैतन्य निर्माण किया एक नवीन, उच्च, सत्यनिष्ठ उदात्त जीवन की आकांक्षा यदि युवाओं में दिख रही है तो वो सिर्फ भगिनी निवेदिता के कारण। भारत के गौरवशाली भूतकाल का अभिमान करते हुए वर्तमान में सामाजिक ऐक्य स्थापित करना ही उनका उद्देश्य था। भारत की एक नियति है और वह भविष्य में बहुत बड़ा कार्य करने वाला है ऐसा उनका पूरा विश्वास था। भावी कार्यकर्ताओं हेतु उन्होंने जमीनी कार्य तैयार किया था ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा।

- डॉ. रासबिहारी बोस

हार्दिक शुभकामनाओं सहित...

सरस्वती शिशु मंदिर

वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय

सुभाषचन्द्र बोस नगर, सूर्यकुण्ड, गोरखपुर

केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली से मान्यता प्राप्त

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान एवं
भारतीय शिक्षा समिति उ.प्र. से सम्बद्ध
स्वामी विवेकानंद आदर्श शिक्षा समिति, गोरखपुर
द्वारा संचालित

कक्षा नर्सरी से द्वादश तक का अर्द्धआवासीय विद्यालय

प्रो. उदयप्रताप सिंह — अध्यक्ष
प्रो. संजीतकुमार गुप्ता — मंत्री
डॉ. राजशरण शाही — उप-मंत्री
सुरेन्द्रनाथ तिवारी — कोषाध्यक्ष
राजबिहारी विश्वकर्मा — प्रधानाचार्य

Tele. No- (0551) 2256168, Mob. +91-9451591016
E-mail-ssm_suryakundgkp@rediffmail.com
Web.-www.ssmsuryakund.org,

देवपुत्र

के स्वामित्व का विवरण

फार्म-४ (नियम-८)

प्रकाशन स्थान	इन्दौर
प्रकाशन अवधि	मासिक
मुद्रक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
प्रकाशक का नाम	कृष्ण कुमार अष्ठाना
(क्या भारत का नागरिक है) (यदि विदेशी है तो मूल देश)	हाँ
पता	४०, संवाद नगर, इन्दौर
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार –पत्र के स्वामी हों तथा जो एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	सरस्वती बाल कल्याण न्यास

मैं कृष्ण कुमार अष्ठाना एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

(कृष्ण कुमार अष्ठाना)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

भगिनी निवेदिता के अमृत वचन

● मैं विश्वास करती हूँ– भारतवर्ष एक अखण्ड, अविभाज्य देश है। एक आवास, एक स्वार्थ, एक सम्प्रीति (प्रेम) के ऊपर ही राष्ट्रीय ऐक्य गठित है। मैं विश्वास करती हूँ– भारतवर्ष का वर्तमान उसके अतीत के साथ घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध है तथा उसके सामने एक गौरवमय भविष्य जाल्वल्यमान है। विश्वजनीन (विश्वस्तरीय) भावों के अंशस्वरूप राष्ट्रीय भावों को आत्मगत करना होगा तथा उसके लिए प्रयोजनानुसार आचारों के बन्धन को तोड़ना होगा। परन्तु ऐसा व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नहीं होना चाहिए। स्वार्थरहित मानव मानो वज्र के समान है। उस निःस्वार्थता की साधना हमें करनी होगी ताकि हम देवता के हाथों वज्र हो सकें। कैसे? यह प्रश्न हमारा नहीं है। लेखा–जोखा भी हम लोगों के लिए नहीं है। हम लोगों के लिए है केवल वेदी पर आत्म–बलिदान।

*****

● जब कोई मानवजाति के कल्याणार्थ सम्पूर्ण आत्मदान करता है, तब वह देवता के हस्त स्थित वज्र के समान शक्ति सम्पन्न हो जाता है। अशिक्षित असहाय एक मानव के ऊपर अत्याचार करना सहज है, किन्तु सचेतन, संगठित दस हजार मनुष्य के ऊपर अत्याचार करना कठिन है। स्वयं चिन्तन कर मार्ग का सन्धान करो। अपने चिन्तन को कार्य में परिणत करो। अतीत की भ्रान्तियों से शिक्षा ग्रहण करो।

*****

● जीवन, जीवन, जीवन मैं जीवन चाहती हूँ तथा जीवन का एकमात्र पर्यायवाची शब्द है स्वाधीनता। वैसा नहीं होने पर मृत्यु ही श्रेयस्कर है।

*****

● प्रत्येक सुशिक्षित नर–नारी अपने राष्ट्र के लिए, सारी मानवजाति के इतिहास में श्रेष्ठ स्तम्भस्वरूप हैं। देश को शरीर, मन से बलिष्ठ देशप्रेमियों की आवश्यकता है। केवल बलिष्ठ देशप्रेमी ही देश का उत्थान कर सकेंगे। वही वीर है जो युद्ध करता है, युद्ध करना पसंद करता है। युद्ध करो, युद्ध करो, केवल युद्ध करो। परन्तु उसमें नीचता अथवा कटुता न रहे। जब संग्राम का आह्वान आएगा, तब सोना मत। संकट के समय भयभीत होना, निरापत्ता (सुरक्षितता) के लिए लालायित होना कपट आध्यात्मिकता है। आध्यात्मिकता के छद्मवेश को धारणकर घृणित स्वच्छन्दता का सन्धान करने वाला, जीवन के युद्धक्षेत्र से कापुरुष की तरह पलायन करने वाला देशप्रेम है– कपट देशप्रेम।

*****

● राष्ट्रीयता को वास्तविक रूप देने हेतु आवश्यक है सभी बच्चों के समक्ष उसके देश के इतिहास को प्रत्यक्ष माध्यम बनाना।

न्याय का पथ अवरोध कर जो खड़े हैं, वे सावधान हो जाएँ। सारे इतिहासों में ऐसे लग्न उपस्थित होते हैं, जब निर्मम निष्ठुर लोग काँप उठते हैं, ईश्वर की करुणा हेतु प्रार्थना कर चीत्कार कर उठते हैं, परन्तु देखते हैं, वह उनके लिए अदृश्य है।

*****

● छात्र लोग तीर्थयात्री की तरह भारत के विभिन्न स्थानों का भ्रमण करें क्योंकि स्थान तथा मनुष्य के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष अभिज्ञता (ज्ञान) की ही आवश्यकता है। हम लोग क्या अपने बाल-बच्चों के अन्दर परदुःखकातरता प्रस्फुटित नहीं कर सकते? यह परदुःखकातरता ही सभी मनुष्यों के दुःख, देश की दुरावस्था तथा वर्तमान में धर्म कितना विपदाग्रस्त है, यह जानने हेतु आग्रह प्रदान करेगा। यह ज्ञान होने के साथ ही देश में अनेक शक्तिशाली कर्मवीरों का जन्म होगा, जो केवल कर्म के लिए ही कर्म करेंगे तथा स्वदेश एवं स्वदेशवासियों की सेवा के लिए मृत्यु को भी आलिंगन करने हेतु प्रस्तुत रहेंगे।

*****

● शिक्षार्थी को याद रखना होगा कि उसका उद्देश्य अपनी उन्नति और कल्याण ही नहीं है, बल्कि जन-देश-धर्म के प्रति दृष्टि रखकर ही वह शिक्षादान करे। वही शिक्षार्थी को यथार्थ मनुष्य बनाकर स्वदेश सेवा में नियुक्त करता है। यह स्वदेश प्रेम जब हृदय में दृढ़ रूप से अंकित होकर देश की संस्कृति तथा आदर्श को गर्व के साथ श्रद्धा करना सिखाता है, तभी दूसरी जाति के महत्व तथा उच्च आदर्श के यथार्थ मर्म को ग्रहण करना संभव होता है। अन्यथा आन्तर्जातिकता (अनेक जातियों वाला) की दुहाई देकर दूसरी जाति का अनुकरण चरित्र को निकृष्ट कर देता है।

*****

● आदर्श के प्रति ध्यान रखकर वर्तमान परिस्थिति हेतु उपयोगी शिक्षा की व्यवस्था करनी होगी। विदेशी शिक्षा पद्धति का अनुकरण करने से शिक्षा का यथार्थ फल मिलना असम्भव है। अतीत की हिन्दू नारियाँ क्या हम लोगों की लज्जा का कारणस्वरूप थीं कि उनके प्राचीन सौन्दर्य एवं माधुर्य, नम्रता एवं धर्मभाव, सहिष्णुता, प्रेम एवं करुणा की शिशुसुलभ गम्भीरता को त्यागकर हम पाश्चात्य के नाना तथ्य-संग्रह करने में व्यग्र होंगे जो सामाजिक उद्यमता का प्राथमिक फल है। ...जो शिक्षा बुद्धि का उन्मेष करते हुए नम्रता तथा कमनीयता को नष्ट कर दे वह प्रकृत शिक्षा नहीं हो सकती। ... अतएव भारतीय नारियों के लिए एक ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसका उद्देश्य होगा मानसिक तथा आध्यात्मिक वृत्तियों में पारस्परिक सहयोगिता का विकास करना।

*****

● इस आदर्श के निर्वहन में शायद जगत् के अन्यान्य देशों की अपेक्षा भारतवर्ष का सौभाग्य ही अधिक है। अन्य सभी देशों की अपेक्षा भारतमाता ही विशेषरूप से महीयसी (महान) नारियों की जननी है। इतिहास, साहित्य जिस किसी भी ओर दृष्टिपात

क्यों न करें, सर्वत्र ही उनकी महिमामय मूर्ति उद्भासित है। ...भारत के इतिहास एवं साहित्य में नारीत्व का राष्ट्रीय आदर्श विराजमान है। जो शिक्षा शुरू से अन्त तक उस आदर्श को उच्चासन प्रदान नहीं करती, उसकी गणना कभी भी भारतीय नारियों की वास्वविक-शिक्षा के रूप में नहीं हो सकती।

*****

● हे भारत सन्तान! तुम लोग अपने सारे प्राचीन महापुरुषों की पूजा करना सीखो। गहन ज्ञान का आह्वान करो। जो चिन्तन, जो भाषा तुमको प्राचीन की गम्भीरता में निहित अतुल सम्पदा का आविष्कार करने में सहायता प्रदान करेगी, वह तुम्हारे निकट ही है, विदेशियों के पास नहीं।इस प्रगाढ़ अनुसन्धित्सा (खोज की इच्छा), इस सत्य के उद्घाटन के ऊपर ही भारत का भविष्य निर्भर है। जो सत्य को केन्द्र बनाकर चलता है, उत्साह एवं उद्दीपना (उत्तेजना) ही उसका अशेष पाथेय बनता है, निराशा उसे रोक नहीं सकती। आज प्रत्येक भारतीय भाषा में बृहत् साहित्य की रचना करनी होगी। इस साहित्य के माध्यम से प्राचीन को मुखर करना होगा, वर्तमान को रूप देना होगा तथा इन दोनों के समन्वय से ही भारत का उज्ज्वल चित्र प्रस्फुटित होगा।

*****

● भारत की राष्ट्रीयता का स्वप्न भारत के लिए स्वार्थपरक नहीं है- यह है मानवता का स्वप्न, जहाँ भारत माता विराट् आदर्श जननी है। जो कुछ भी महान्, प्रेममय तथा सर्वव्यापी हो, उसको हमारी मातृभूमि पालन तथा धारण करने वाली होगी।

*****

● इसका कोई विशेष महत्व नहीं है कि किसने, किस कर्मधारा का ग्रहण किया है। उन्हें हम लोग अवश्य ही राष्ट्रीय नेता का सम्मान प्रदान करेंगे, यदि वे यथार्थ कर्म द्वारा वास्वविक आत्मोत्सर्ग के द्वारा ऐकान्तिक, देशभक्ति का परिचय दें। हे मेरे भारतीय जनगण, हे पददलित अज्ञ (अज्ञानी), असहाय जनगण! थोड़ा स्वर ऊँचा करो, ताकि तुम्हारा क्रन्दन सुना जाए, तुम्हारे सहज सुख को जान सकें तथा हम अपने हृदय को तुम्हारे साथ ही समवेत दुःख-कष्ट, समवेत प्रेम में सम्मिलित कर सकें।

*****

● बलम् उपास्व! पहले बलवान बनो, शक्तिशाली बनो। पश्चात् अपने बल को संयमित करो। अपना धर्म संयमित बलवन्तों का है। शक्ति की उपासना करो! परन्तु याद रहे, यह शक्ति शिव के अधीन होनी चाहिए। शक्तियुक्त शिव व शिवयुक्त शक्ति यह अपना राष्ट्रीय ध्येय है। जहाँ संयमित शक्ति हैं। वहाँ मंगलमय शिव है। मेरे मतानुसार मनुष्य का पहला कर्त्तव्य शक्तिशाली होना है। अपने पास होने मात्र से ही दीन-दुखियों में सुरक्षितता का भाव निर्माण होना चाहिए। आप दीन दुखी आसपास है यह देखने मात्र से उनके पास कोई दुष्ट व्यक्ति आना भी नही चाहिए ऐसा प्रभावी हमें बनना है। ऐसा जीवन जिसको सध गया वही मनुष्य जीवन की सफलता है।

SURYA ROSHNI LTD & SURYA FOUNDATION

Tel. : 011-25262994, 25253681 Website : www.suryafoundation.net.in

Surya Foundation is a renowned organisation for imparting training to the youth for their all-round development. We require the following categories of dedicated & diligent youth brought up in sound SANGH culture with impeccable character and interested in social and professional work for entry in SURYA ROSHNI LTD and SURYA FOUNDATION. Candidates will be put through an interview process prior to their selection.

Posting will be given after successful completion of 3 months initial training at Surya Training Campus followed by one year On Job Training (OJT).

Categories & Salary

Post	Experience	Salary during Training & OJT	CTC after OJT
CA	IPCC / Intermediate	3 - 3.5 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	5 - 6 L Per Annum	- do -
	5 years	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	10 years & above	9.5 - 12 L Per Annum	- do -
Engineer	B.Tech. (IIT)	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech. (NIT)	4.5 - 5 L Per Annum	- do -
	B.Tech. (Others)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
MBA	IIM	6 - 7.5 L Per Annum	- do -
	Other Institutes	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
Mass Communication (Media)		2.4 - 3 L Per Annum	- do -
MCA, B.Ed, M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience)*		2 - 3 L Per Annum	- do -
B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store		2 L Per Annum	- do -
B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com.		1 L Per Annum	- do -

Application Form

(Apply on a separate sheet of paper)

Affix latest Photograph here

Full Name (In Capital) _____ Date of Birth _____ Caste _____ Married / Single ___

Father's Name _____ Father's Occupation _____ Monthly Salary ____

Brothers (Excluding Self) _____ Sisters _____

Educational Qualification _____ (Attach Photocopy of Marksheet)

Have you attended NCC/NSS/OTC/ITC/Sheet Shivir? Give Details of location of Camp and dates _____

Were you associated with Seva Bharati / Vidya Bharati / Vanvasi Kalyan Ashram / Any other Sangh Project? Give details.

Is anyone known to you in Surya Family? Give his name and department _____

Have you ever been Interviewed in Surya Foundation? If yes, give Year and Cadre for which Interviewed. ____

Address for Correspondence _____ Pincode _____ Phone No. ____ Mobile _____ Email _____

Give details of any special achievements, qualifications etc.

Apply with detailed CV along with the application at the following address or Email : suryainterview@gmail.com.

Surya Foundation : B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063

Apply within two months of the publication of the advertisement

भारतीयों के लिए
माँ का आह्वान

अतीत भारत के पुत्रो, जागो!
जगन्नाथ के द्वारकानाथ तक,
केदारनाथ से कन्याकुमारी तक,
क्या तुम एक नहीं?
देखो, इतिहास लुप्त नहीं होता।
तुममें आज भी तुम्हारे अतीत की महत्ता जीवित है,
तब जागो व उठो!
संघर्ष करते चलो तथा लक्ष्य प्राप्ति तक रुको नहीं!
अपनी सेनाओं को जुटाओ!
अपनी सेना के साथ आगे बढ़ो!
क्या तुम एक नहीं?
एक ही माँ के बच्चो,
एक ही देश की सन्तानों,
एक ही परिवार के भाइयों,
क्या तुम एक नहीं?
बंगाल के पुत्रों, प्राचीन मगध के उत्तराधिकारियों,
महान् साम्राज्यों वाले एक समय के केन्द्र,
तुम्हारे मंत्र से शक्तिशाली राष्ट्र जन्मे,
पूर्व, उत्तर व दक्षिण में तुमने धर्मोपदेश दिए,
तुमने शास्त्रों को रचा व महान् विद्वत्ता अर्जित की,
क्या तुम नहीं रहोगे?
मेरे बंगाल के बच्चो!
देखो, तुम में अतीत जीवित है!
क्या तुम एक नहीं?
अयोध्या के पुत्रो, वाराणसी के बच्चो,
सुदूर प्रसिद्ध मन्दिरों व नगर प्रासादों के वासियों
जागो व उठो! तुममे तुम्हारा सारा अतीत जीवित है,
क्या तुम एक नहीं हो!
राजपूत, मराठा, सिख, मुसलमान व द्रविड़,
तुम्हारा अतीत क्या तुम्हारा नहीं?
मशीनों से डरो नहीं!
अन्तर्मन ही महानता को जगाओ,
सम्मिलित करो, रचो आक्रमण व शक्ति से जीत लो;
मानव-मन के सुदृढ़तम नगर को,
रेंगने पर सन्तुष्ट मत होओ
वरन् ऊँची छलांग लगाओ।

● भगिनी निवेदिता

सुपोषित माता सुपोषित शिशु

महतारी जतन योजना

गर्भवती माताओं को निःशुल्क पौष्टिक आहार

आंगनबाड़ी केन्द्रों में गर्भवती माताओं को सप्ताह में 6 दिन गरमागरम रोटी, दाल, चांवल, दो प्रकार की सब्जी,फल, गुड़, पापड़, अचार युक्त पौष्टिक भोजन निःशुल्क

पौष्टिक भोजन की आकर्षक थाली

R.O. No. 62318/7

गर्भवती माताओं का ध्यान-स्वस्थ समाज का निर्माण

महिला एवं बाल विकास विभाग

- देश का पहला वन स्टॉप सेन्टर रायपुर में प्रारंभ।
- प्रदेश में 50 हजार आंगनबाड़ी केन्द्रों का संचालन। लगभग 26 लाख बच्चों और गर्भवती माताओं को पूरक पोषण आहार और टीकाकरण सहित अनेक महत्वपूर्ण सेवाएं।
- मुख्यमंत्री कन्या विवाह योजना के तहत प्रदेश की 68 हजार से अधिक गरीब परिवार की बेटियों का विवाह संपन्न। योजना के तहत 15 हजार रूपए की सहायता दी जाती है। विधवा महिलाओं के पुर्नविवाह के लिए 30 हजार रूपए की सहायता राशि।

- नोनी सुरक्षा योजना के तहत बालिकाओं के प्रति समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने और बेटियों को समाज में बराबरी दिलाने की पहल। योजना के तहत गरीब परिवारों में एक अथवा दो बालिकाओं के जन्म पर प्रत्येक बालिका के नाम से बैंक में 5 हजार जमा करने का प्रावधान। 18 वर्ष की आयु तक विवाह नहीं करने और 12 वीं तक की शिक्षा पूर्ण करने पर 1 लाख रूपए की राशि।
- छत्तीसगढ़ महिला कोष की ऋण योजना के तहत 27 हजार महिला स्व-सहायता समूहों को विभिन्न व्यवसायों के लिए 46 करोड़ रूपए से ज्यादा राशि आसान शर्तों पर वितरित।
- मुख्यमंत्री बाल संदर्भ योजना के तहत लाभान्वित बच्चों की संख्या 130425।

सबका साथ - सबका विकास

छत्तीसगढ़ जनसंपर्क

डाक पंजीयन आय.डी.सी./एम.पी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

स्थापना 1986
विद्या भारती
पंजी क्र. 17195/86

बोर्ड परीक्षाओं में शत प्रतिशत परीक्षा परिणाम
एवं प्रावीण्य सूची में स्थान

सरस्वती विद्यापीठ

आवासीय विद्यालय, शिवपुरी (म.प्र.)

प्रवेश प्रारंभ

कक्षा
अरूण से द्वादश तक

गणित, विज्ञान, कृषि एवं वाणिज्य संकाय

कार्यालय : 09111105801, 09111105802, 09111105810, 09111105824
Email : svpshivpuri2010@gmail.com, http://www.svpshivpuri.com
मोबाईल : प्राचार्य - 094257-99647, व्यवस्थापक - 094254-29425

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा अजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, प्रेस कॉम्पलेक्स, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित
प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना